मेट्रो चेतना

अंक - 37

मेट्रो रेलवे, कोलकाता

मेट्रो चेतना

अंक-37

संरक्षक

पी. उदय कुमार रेड्डी

परामर्शदाता

अंबिका जैन
प्रधान वित्त सलाहकार सह
मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक

किरण बोस
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

सहयोगी

कीर्ति किरण बागे, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
राजेश एक्का, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
शांत्वनु नाथ, कनिष्ठ अनुवादक
मानसिंह मेलगंडी, निजी सचिव-II

सम्पर्क

राजभाषा अनुभाग
मेट्रो रेल भवन (नवम तल)
33/1, जवाहर लाल नेहरू रोड,
कोलकाता - 700071
टेलीफोन - (020) - 55735, 55037

केवल नि:शुल्क वितरण हेतु प्रकाशित। इसमें प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों/रचनाकारों के अपने हैं। संपादक मंडल इसके लिए जिम्मेवार नहीं है।

अनुक्रमणिका

महाप्रबंधक का संदेश		1
संपादकीय		2
मेट्रो समाचार		3-6
मेरी उड़ान	रूपा भट्टाचार्य	7-9
सरजू की कहानी	सरला शामकुले	10-11
भारत की विख्यात लोक कलाएं (चित्रकला विशेष)	निकिता बोस	12-13
अंत की शुरूआत (कविता)	संस्कृति चित्रांश	14
भारतीय संस्कृति में मातृत्व का महत्व	कीर्ति किरण बागे	15-16
निवेश : सामान्य अवधारणा	राजेश एक्का	17-21
बदलाव (कविता)	शंकर कच्छप	21
ऑपरेशन सिंदूर : एक संकल्प, एक संदेश, एक सावधानी	लीलावती सिंह	22
प्रेत भोजन	शांत्वनु नाथ	23-25
नौकरी (कविता)	तन्मय पाल	25
मेरा देश महान	प्रियंका कनोजिया	26-27
आत्मविश्वास	मानसिंह मेलगंडी	28-29
जैसा करोगे वैसा भरोगे	पेड्डा ममता राव	29-30
राजभाषा प्रोत्साहन एवं पुरस्कार योजनाएं		31-34
हिंदी के हस्ताक्षर		35
नन्हीं कूची		आवरण पृष्ठ

आवरण पृष्ठ

सामाजिक न्याय और अधिकारिता संबंधी संसदीय स्थायी समिति (2024-25) का मेट्रो रेलवे, कोलकाता का अध्ययन दौरा

पी. उदय कुमार रेड्डी
महाप्रबंधक

महाप्रबंधक कार्यालय
मेट्रो रेल भवन
33/1 ज. ला. नेहरू रोड
कोलकाता-700 071

महाप्रबंधक का संदेश

साहित्य एक ऐसी विधा है जो हमारे मस्तिष्क को उद्वेलित करती है। साहित्य ही हमें अपने आसपास की दुनिया को समझने, अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने और दूसरों के अनुभवों और दृष्टिकोणों को जानने का अवसर प्रदान करती है।

हमारा सदैव यह कर्तव्य होना चाहिए कि हम हिंदी भाषा और इसके प्रयोग को बढ़ावा'दें और इसके महत्व को उजागर करें। हमें साथ मिलकर हिंदी को सभी के लिए सरल और सुगम बनाना चाहिए।

मेट्रो रेलवे का राजभाषा विभाग अपनी हिंदी पत्रिका 'मेट्रो चेतना' के 37वें अंक का प्रकाशन कर रहा है। इस पत्रिका में आपको विभिन्न विषयों पर लेख, कहानियाँ, कविताएँ, समीक्षाएँ और बहुत कुछ पढ़ने को मिलेगा। मुझे विश्वास है कि 'मेट्रो चेतना' पत्रिका पाठकवर्ग को ज्ञानवर्धक, मनोरंजक और प्रेरणादायक सामग्री प्रदान करता रहेगा।

पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी अधिकारी व कर्मचारी प्रशंसा के पात्र हैं। मैं सभी को बधाई देता हूँ तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ,

(पी. उदय कुमार रेड्डी)
महाप्रबंधक

संपादकीय

प्रिय पाठको,

'ई'-माध्यम से 'मेट्रो चेतना' का एक और अंक आपके स्क्रीन पर प्रस्तुत है।

अत्यंत हर्ष के साथ एक बात साझा करना चाहूँगी कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर माननीय गृहमंत्री की अध्यक्षता में दिनांक 26.06.2025 को नई दिल्ली में एक भव्य समारोह का आयोजन किया जा रहा है।

मेट्रो का राजभाषा विभाग राजभाषा के प्रचार-प्रसार की दिशा में हमेशा सचेष्ट रहा है। हमारा यह प्रयास रहता है कि राजभाषा संबंधी कार्य में सरलता लाई जाए। सभी कर्मचारी स्वत: राजभाषा से जुड़े एवं उसे समझ कर अपने कार्यालयीन कार्यों में इसका प्रयोग करें।

'मेट्रो चेतना' सभी मेट्रो परिवार के हिंदी प्रेमी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए एक प्लेटफॉर्म है जहां न केवल रेल कर्मी, बल्कि उनके परिवार के सदस्यगण भी अपनी लेखन प्रतिभा, बच्चों की चित्रकारी, कविताओं एवं यात्रा वृत्तांतों के माध्यम से हमसे जुड़ते हैं।

मुझे खुशी है कि 'मेट्रो चेतना' के लेखकों ने स्वयं ही इस पत्रिका को एक नया आयाम प्रदान किया है। पत्रिका में मुद्रित लेख, कविता एवं कहानी बौद्धिकता को प्रदर्शित करती है। 'मेट्रो चेतना' की संपादकीय टीम भी इसे महसूस करती है।

इस अंक के कुछ विशेष आकर्षण है- कहानी 'मेरी उड़ान', ग्राम्य परिवेश पर आधारित - 'सरजू की कहानी', विभिन्न स्वाद की कविताएं-'कविता संग्रह', निवेश से संबंधित लेख 'निवेश: सामान्य अवधारणा' एवं 'आत्मविश्वास' ।

इसके अलावा स्थायी स्तंभ में हिंदी साहित्यकार नागार्जुन को पढ़ना न भूलिएगा।

आपकी प्रतिक्रियाओं से हमारा मनोबल न केवल बढ़ता है, बल्कि हमें आत्मिक संतुष्टि भी होती है कि हमारा समर्पित पाठक वर्ग, हमसे और बेहतर संपादन की उम्मीद रखता है।

.. शेष अगले अंक में ।

किरण

(किरण बोस)
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

मेट्रो समाचार

सामाजिक न्याय और अधिकारिता संबंधी संसदीय स्थायी समिति का अध्ययन दौरा

सामाजिक न्याय और अधिकारिता संबंधी संसदीय स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री पी.सी.मोहन और अन्य सदस्यों ने दिनांक 31.05.2025 को कोलकाता में मेट्रो रेल के महाप्रबंधक श्री पी उदय कुमार रेड्डी, पूर्व रेलवे के महाप्रबंधक श्री मिलिंद के देउस्कर, दक्षिण पूर्व रेलवे के महाप्रबंधक श्री अनिल कुमार मिश्रा और अन्य वरिष्ठ रेलवे अधिकारियों के साथ बैठक की। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता संबंधी संसदीय स्थायी समिति के सदस्यों ने मेट्रो रेलवे में सुगम्य भारत अभियान (एआईसी) योजना के अंतर्गत किए गए सुविधा कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने दिव्यांग व्यक्तियों के लिए मेट्रो सेवाओं तक सुगम पहुंच सुनिश्चित करने के लिए इस संबंध में और सुधार हेतु अपने बहुमूल्य सुझाव और सलाह भी दी। श्री रेड्डी ने सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता संबंधी संसदीय स्थायी समिति के अध्यक्ष और सदस्यों को मेट्रो रेल द्वारा सुविधाओं में वृद्धि के लिए की गई विभिन्न पहलों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने माननीय सदस्यों से प्राप्त सभी सुझावों पर विचार करने और तदनुसार आवश्यक कार्रवाई करने का आश्वासन भी दिया।

रेलवे संरक्षा आयुक्त (सीआरएस) द्वारा ग्रीन लाइन के एस्प्लानेड सियालदाह खंड का निरीक्षण

श्री सुमीत सिंघल, रेलवे संरक्षा आयुक्त (सीआरएस), एनएफ सर्कल द्वारा ग्रीन लाइन के एस्प्लानेड सियालदह खंड का निरीक्षण किया तथा सभी उप-प्रणालियों जैसे ट्रैक, सुरंग, सुरंग वेंटिलेशन, ट्रेन परिचालन की सुविधाओं का विस्तृत निरीक्षण किया।

इस निरीक्षण के दौरान सीआरएस के साथ केएमआरसीएल के प्रबंध निदेशक एवं मेट्रो रेलवे के प्रधान मुख्य इंजीनियर श्री अनुज मित्तल तथा मेट्रो रेलवे और केएमआरसीएल के अन्य उच्चाधिकारी भी मौजूद थे। सीआरएस की औपचारिक मंजूरी मिलने पर सॉल्ट लेक सेक्टर V से हावड़ा मैदान तक ग्रीन लाइन के 16.55 किलोमीटर के संपूर्ण विस्तार पर सेवाएं आरंभ करने की योजना तैयार की जाएगी।

मेट्रो रेलवे की हरित पहल और सौर परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा

रेलवे बोर्ड के अपर सदस्य (रेल विद्युतीकरण) ने 28.04.2025 को मेट्रो रेल भवन में मेट्रो रेलवे, कोलकाता द्वारा की गई विभिन्न हरित पहलों की प्रगति की समीक्षा की। बैठक के दौरान चल रही ऊर्जा बचत और दक्षता सुधार परियोजनाओं की प्रगति की भी समीक्षा की गई। इस दौरान स्टील थर्ड रेल की जगह अत्यधिक सुचालक एल्युमीनियम थर्ड रेल का प्रतिस्थापन, भूमिगत खंड के लिए टनल वेंटिलेशन सिस्टम (टीवीएस) और पर्यावरण नियंत्रण प्रणाली (ईसीएस) और उन्नत रासायनिक बैटरी वाली बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणाली आदि की समीक्षा की गई।

समीक्षा बैठक के बाद अपर सदस्य (रेल विद्युतीकरण) ने 2030 तक शुद्ध शून्य कार्बन उत्सर्जक के भारतीय रेलवे के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मेट्रो रेलवे, कोलकाता को नवीकरणीय स्रोतों से बिजली आपूर्ति की व्यवस्था के संबंध में प्रबंध निदेशक/वितरण, सीईएससी के साथ बैठक की।

महाप्रबंधक द्वारा मेट्रो रेल खिलाड़ियों सम्मान

महाप्रबंधक श्री पी उदय कुमार रेड्डी ने दिनांक 02.06.2025 को मेट्रो रेल भवन में मेट्रो रेलवे स्पोर्ट्स एसोसिएशन द्वारा आयोजित एक समारोह में हाल के समय में विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर के टूर्नामेंटों में उत्कृष्ट उपलब्धियां हासिल करनेवाले 21 मेट्रो खिलाड़ियों को सम्मानित किया। महाप्रबंधक ने सभी खिलाड़ियों को उन्हें मेट्रो का गौरव बताते हुए उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए बधाई दी। उन्होंने उम्मीद जताई कि भविष्य में भी वे मेट्रो परिवार का मान बढ़ाने का प्रयास करते रहेंगे।

मेट्रो रेलकर्मी ने विश्व ब्रिज चैंपियनशिप के लिए किया क्वालीफाई

मेट्रो रेलवे के ब्रिज खिलाड़ियों ने मेट्रो परिवार को एक बार फिर से गौरवान्वित किया है।

मेट्रो रेलवे के दो कर्मी नामत: श्री सुमित मुखर्जी और श्री साग्निक रॉय ने 47वीं विश्व ब्रिज टीम चैंपियनशिप के लिए क्वालीफाई कर लिया जो अगस्त, 2025 में डेनमार्क में आयोजित की जाएगी। महाप्रबंधक श्री पी उदय कुमार रेड्डी ने इस उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए दोनों को बधाई दी।

तपन सिन्हा मेमोरियल अस्पताल में अग्नि सुरक्षा सप्ताह - 2025

मेट्रो रेलवे यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के प्रयास में मेट्रो रेलवे, कोलकाता नियमित तौर पर प्रशिक्षण आयोजित करता है। इसी कड़ी में 21 से 25 अप्रैल, 2025 तक अग्नि सुरक्षा सप्ताह का आयोजन किया गया जिसके दौरान तपन सिन्हा मेमोरियल अस्पताल में 23.04.2025 को मेट्रो रेल अग्निशमन सेवा और पश्चिम बंगाल अग्निशमन सेवा विभाग के संयुक्त प्रयास से अग्नि सुरक्षा पर एक प्रस्तुति दी गई। इस दौरान विभिन्न प्रकार के अग्निशमन उपकरण और उनके उपयोग के तरीकों के संबंध में जानकारी दी गई।

नोआपाड़ा कारशेड में अग्निशमन प्रशिक्षण

दिनांक 20.05.2025 को मेट्रो रेलवे के नोआपाड़ा कारशेड में वरिष्ठ अधिकारियों की देखरेख में फील्ड कर्मियों के लिए अग्निशमन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान मेट्रो कर्मचारियों को विभिन्न प्रकार की आग और धुआं को बुझाने का प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में विद्युत विभाग के कर्मचारियों ने भाग लिया।

बंगाल केमिकल मेट्रो स्टेशन पर अग्निशमन प्रशिक्षण का आयोजन

दिनांक 21.04.2025 को बंगाल केमिकल मेट्रो स्टेशन पर वरिष्ठ अधिकारियों की देखरेख में फील्ड स्टाफ के लिए अग्निशमन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में मेट्रो कर्मियों को विभिन्न प्रकार के आग और धुओं से निपटने का प्रशिक्षण दिया गया।

मॉक ड्रिल का आयोजन

एनडीआरएफ और पश्चिम बंगाल अग्निशमन एवं आपात सेवा (डब्ल्यूबीएफ एंड ईएस) कर्मियों के साथ संयुक्त रूप से दिनांक 04.04.2025 की रात को वाणिज्यिक अवधि के बाद हावड़ा

और महाकरण मेट्रो स्टेशनों के बीच मेट्रो सुरंगों के भीतर यात्री निकासी की मॉक ड्रिल आयोजित की गई। इस मॉक ड्रिल का उद्देश्य निकासी कौशल को उन्नत करने के साथ-साथ ऐसी आपात स्थितियों से निपटने के लिए उनकी सतर्कता और तैयारी की जांच करना भी था। इस अभ्यास के दौरान मेट्रो रेल के वरिष्ठ अधिकारी और विभिन्न विभागों के कर्मचारी मौजूद थे।

महाप्रबंधक द्वारा ग्रीन लाइन के सेंट्रल पार्क डिपो का निरीक्षण

मेट्रो रेलवे के महाप्रबंधक श्री पी. उदय कुमार रेड्डी द्वारा दिनांक 06.05.25 को ग्रीन लाइन के सेंट्रल पार्क डिपो का निरीक्षण किया गया। इस निरीक्षण के दौरान श्री रेड्डी ने डिपो के कर्मचारियों और अधिकारियों से बातचीत की और रखरखाव कार्यों का जायजा लिया।

आईपीएल टी-20 क्रिकेट प्रेमियों के लिए विशेष मध्य रात्रि मेट्रो सेवाएं

क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ बंगाल (सीएबी) और मेसर्स गेम प्लान स्पोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड (कोलकाता नाइट राइडर्स की ओर से) के अनुरोधों पर विचार करते हुए कोलकाता और इसके उपनगरों के क्रिकेट प्रेमियों के सुविधा के लिए 26.04.2025 (शनिवार) रात को ईडन गार्डन्स में खेले जाने वाले कोलकाता नाइट राइडर्स के आईपीएल टी-20 मैच के बाद ब्लू लाइन और ग्रीन लाइन-2 में विशेष मेट्रो सेवाएं संचालित की गईं।

मेट्रो रेलवे में डॉ. बी.आर. अंबेडकर की 134वीं जयंती का आयोजन

दिनांक 15 अप्रैल, 2025 को मेट्रो रेल भवन में डॉ.बी.आर.राव अंबेडकार की 134वीं जयंती उल्लासपूर्वक मनाई गई। मेट्रो रेलवे, कोलकाता के महाप्रबंधक श्री पी. उदय कुमार रेड्डी ने दीप प्रज्वलित करते हुए कार्यक्रम का उद्घाटन किया और डॉ. अंबेडकर की तस्वीर पर माल्यार्पण करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। समारोह में उपस्थित अन्य वरिष्ठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भी देश के इस महान सपूत को पुष्पांजलि अर्पित की तथा सभी के समान अधिकारों की रक्षा करने की शपथ ली।

डॉ. बी.आर. अंबेडकर के योगदान को सम्मानित करने के लिए निबंध प्रतियोगिता

दिनांक 17.04.2025 को नोआपाड़ा प्रशिक्षण केंद्र में डॉ. बी.आर. अंबेडकर के योगदान को सम्मानित करने और उनकी विरासत के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से एक निबंध प्रतियोगिता आयोजित का आयोजन किया गया। इस

प्रतियोगिता में मेट्रो कर्मचारियों ने भाग लेते हुए उन्हें अपना सम्मान व्यक्त किया। इस निबंध प्रतियोगिता का विषय - 'डॉ.बी.आर. अंबेडकर : भारत में सामाजिक न्याय के निर्माता' था।

मेट्रो का मानवीय चेहरा

- दिनांक 10.04.2025 को ड्यूटी पर तैनात आरपीएफ और स्टेशन कर्मियों ने एस्प्लानेड मेट्रो स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर 72 वर्षीय एक अस्वस्थ बुजुर्ग व्यक्ति को प्राथमिक उपचार प्रदान करते हुए उन्हें एसएसकेएम अस्पताल में भर्ती कराया।
- दिनांक 10.04.2025 को सॉल्ट लेक सेक्टर V स्टेशन पर भी एक 37 वर्षीय यात्री को चिकित्सा सहायता प्रदान करते हुए अस्पताल में भर्ती कराया गया।
- दिनांक 05.04.2025 को मास्टरदा सूर्यसेन मेट्रो स्टेशन पर तैनात एक ऑन-ड्यूटी महिला रेलवे सुरक्षा बल कर्मी को नियमित गश्त के दौरान प्लेटफॉर्म पर एक लावारिस बैग बरामद हुआ जिसे उचित सत्यापन और औपचारिकताओं के बाद उसके वास्तविक स्वामी को सौंप दिया गया।

मेट्रो राइड कोलकाता ऐप में नए यात्री-अनुकूल फीचर्स

यात्रियों की सुविधा के लिए, मेट्रो रेलवे मेट्रो राइड कोलकाता ऐप में कुछ नए यात्री-अनुकूल फीचर्स शुरू किए गए हैं। दिनांक 03/04/25 से यात्री एक ही ट्रांजेक्शन में कई यात्रियों के लिए एक ही क्यूआर कोड टिकट खरीद सकेंगे। मेट्रो राइड कोलकाता ऐप के माध्यम से खरीदे गए एक क्यूआर कोड वाले टिकट से अधिकतम 4 यात्री यात्रा कर सकेंगे। एक ही क्यूआर कोड टिकट का इस्तेमाल प्रवेश और निकासी द्वार पर 4 बार तक किया जा सकेगा। क्यूआर कोड टिकट लेने वाले यात्रियों को अपने सह-यात्रियों (यदि कोई हो) को पहले मेट्रो गेट से प्रवेश/निकास करने देना चाहिए। साथ ही मेट्रो राइड कोलकाता ऐप के नए उपयोगकर्ताओं के लिए 4 अंकों के पिन की सहायता से लॉगिन करने की सुविधा प्रारंभ की गई है।

मेट्रो रेलवे में नई यात्री सुविधाएं

दक्षिणेश्वर स्टेशन पर नई यात्री सुविधा : एक अनूठी पहल के तहत ब्लू लाइन के दक्षिणेश्वर मेट्रो स्टेशन पर रिलैक्सेशन चेयर सेवा, एआई-सक्षम डीप टिश्यू मसाज प्रीमियम सेवा शुरू की गई है। उल्लेखनीय है कि इस सेवा का उद्घाटन सबसे पहले मेट्रो रेलवे के महाप्रबंधक श्री पी. उदय कुमार रेड्डी ने 23.05.2025 को एस्प्लेनेड स्टेशन पर किया। यह सुविधा यात्रियों को कम कीमत पर थकान से छुटकारा पाने और अपने तनावग्रस्त नसों को आराम दिलाने में उनकी सहायता करेगी।

एक अन्य पहल के तहत ग्रीन लाइन-2 के हावड़ा मेट्रो स्टेशन पर डिजिटल लॉकर सेवा का उद्घाटन किया गया। मेट्रो रेलवे के महाप्रबंधक श्री पी. उदय कुमार रेड्डी ने दिनांक 23.05.2025 को मेट्रो रेलवे के वरिष्ठ अधिकारियों की मौजूदगी में स्टेशन परिसर में इस अनूठी स्मार्ट सुविधा का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि मेट्रो रेलवे विभिन्न मेट्रो स्टेशनों पर यात्रियों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करने का प्रयास कर रहा है, उन्होंने उम्मीद जताई कि यात्री बड़ी संख्या में इन सुविधाओं का उपयोग कर सकेंगे क्योंकि यह उनके लिए सुविधाजनक होगा। हावड़ा में इस सुविधा के उपलब्ध होने से अब यात्री अपने सामानों को सस्ती दरों पर इस लॉकर में सुरक्षित रखकर अन्यत्र जगहों पर अपने कार्यों के निपटान हेतु जा सकते हैं।

कोई भी यात्री हावड़ा मेट्रो स्टेशन पर एक दिन में अधिकतम 12 घंटे के लिए इस स्मार्ट डिजिटल लॉकर सेवा को किराए पर ले सकेगा। इसी तरह की डिजिटल लॉकर सेवा जल्द ही दक्षिणेश्वर, सियालदह, पार्क स्ट्रीट, महानायक उत्तम कुमार और एस्प्लेनेड स्टेशनों पर भी उपलब्ध कराई जाएगी।

प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि केंद्र

किफायती मूल्य पर गुणवत्तापूर्ण दवाइयां उपलब्ध कराने के उद्देश्य से मेट्रो रेलवे ने नेताजी, दक्षिणेश्वर और सियालदह स्टेशनों पर पहले ही प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि केंद्र (पीएमबीजेके) खोल दिए हैं। ऑरेंज लाइन के कवि सुभाष स्टेशन पर भी ऐसा ही एक और आउटलेट खोला जाएगा।

मेरी उड़ान

जीवन में हम रोजमर्रा की उलझनों से बंधे आगे और आगे लड़खड़ाते से बढ़ते चले जाते हैं। उस अनुभव का महत्व महीनों, वर्षों बाद, किसी बेचैन से एकांत क्षण में महसूस होता है। तब यही लगता है, हाय! हम क्यों न जान पाए? धीमी-धीमी फुहार बरस रही है। चारों ओर फैली हरियाली मन को आह्लादित कर रही है। मेरी खुशियों की बारिश, हां, मैं उसे 'बारिश' कहती हूँ। जब-जब वो मेरे सामने आता है, मेरे वजूद पर अपनी छाप छोड़कर एक मीठे अहसास की बारिश कर जाता है ...।

'मां, देखो रसोई में कुछ जल रहा है' - निहार की आवाज से घबराकर, कागज-कलम फेंकते हुए मैं रसोई की ओर तेजी से भागी, देखा, सब्जी चारकोल बनकर धुँआ छोड़ रहा था।

मैं भी पागल हूँ, बेकार ही लिखने बैठी थी। बड़बड़ाती हुई मैं बरतन साफ करने लगी।

मैं एक लेखिका हूँ, नहीं! थी। दरअसल मुझमें जो एक कहानीकार हुआ करती थी, उसे मैंने 'निहार' के पैदा होते ही कुचल दिया था। 'निहार' मेरा इकलौता पुत्र, जिसे निहारते हुए थकती नहीं थी। सोचती कुछ ही दिनों की रूकावट है, इसके कुछ बड़े होते ही फिर से लिखूँगी। निहार तो बड़ा हो गया, पर मैं फिर से लिख न सकी।

चलो कहीं घूम आते हैं। पतिदेव कहते-अभी नहीं! निहार का फाइनल एग्जाम नजदीक है, वह डिस्टर्ब हो जाएगा। बहन की शादी में भी केवल एक दिन के लिए गाजियाबाद गई थी।

छोटी ने झल्लाकर कहा भी था - क्या दीदी? तुम सारा समय निहार के पीछे रहती हो! देख छोटी! जब तेरा बेबी होगा, तब तू समझेगी, कहकर मैं मुस्कुरा पड़ी थी।

स्कूल फाइनल के बाद घर-गृहस्थी छोड़कर मैं कोटा में दो साल निहार के साथ रही, ताकि उसे खाने-पीने और पढ़ने का सही माहौल मिले। निहार उस वक्त थोड़ा झुंझलाया भी था। मम्मी! मेरे दोस्तों की माताएं कहां कोई कोटा जा रही हैं?

'कोई जाए या न जाए मैं तो जाऊँगी'। मैं तुझे अकेला नहीं छोड़ सकती। उस दरम्यान मैंने लिखने की कोशिश की थी, मगर मेरी कहानियां कुछ फीकी, नीरस और अधूरी सी रह जाती।

निहार के नोट्स तैयार करने में मैं उसकी मदद करती, उसी में मेरी गहरी दिलचस्पी थी ऐसा लगता था, मैं भी उसके साथ परीक्षा की तैयारी कर रही हूँ।

भोर में साथ उठना, उसे गर्म चाय बनाकर देने से लेकर रात में उसके सोने तक मैं जागती।

निहार सुबह उठने में आनाकानी करता तो मैं समझाती - 'बेटा उठ जा, मौके रोज दस्तक नहीं देते'।

फिर वह दिन आ गया जब मेरी तपस्या सफल हुई और निहार ने इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा पास कर लिया।

हां, उस दिन मेरी खुशियों की बारिश सच में मुझ पर बेइन्तहा बरस रही थी।

हां, दिल के अंदर से कुछ भारी था, शायद निहार से एक 'थैंक यू' की उम्मीद थी। खैर मां जो थी। इस विचार को मैंने झटक दिया। फिर तो रोजमर्रा की उलझनों में बंधे समय आगे

की ओर निकलता चला गया। इस बीच निहार ने इंजीनियरिंग की परीक्षा पास कर एक अच्छी नौकरी ढूँढ़ ली थी।

वैसे, हमेशा मुझे लिखने की एक अकुलाहट रहती। मैं लिखने बैठती, मगर कहानी आगे बढ़ने का नाम ही न लेती। ऐसा लगता था, समय के साथ सभी किरदार थक चुके हैं।

एक दिन पति देव ने कह दिया-तुम्हें दरअसल लिखना आता ही नहीं! वरन् अब तक कहानी पूरी होकर किताब छप चुकी होती।

मैं धक से रह गई, क्या ये सच है? ज्यादा सोच पाती उससे पहले ही डोरबेल की घंटी बज उठी थी।

उठकर दरवाजा खोला, निहार एक युवती के साथ खड़ा था। मां, ये 'रिमी' है, हमलोग साथ में जॉब करते हैं।

ओह, अंदर आओ! मैंने कुछ असमंजस में कहा। मैं तुम लोगों के लिए चाय बनाती हूँ। अरे नहीं मां, तुम बैठो! आज मैं सबके लिए कॉफी बनाता हूँ। बिना कुछ सुने निहार रसोई में चला गया। मैं अवाक थी, जो लड़का एक गिलास पानी तक खुद से नहीं पीता, वह सबके लिए कॉफी बनाने चला गया।

मैंने चश्में के अंदर से युवती की ओर देखा - साफ रंग, खुले बाल, जींस-टॉप पहनी हुई एक मध्यम कद की युवती थी।

मैंने पूछा - बेटी कहां रहती हो? आंटी, मैं गर्ल्स-हॉस्टल में रहती हूँ, अभी छह महीने पहले ही कंपनी ज्वाइन किया है। अच्छा, मगर गर्ल्स-हॉस्टल तो कंपनी से काफी दूर है, तुम आना-जाना कैसे करती हो?

आंटी, वो निहार मुझे पिक-अप और ड्राप कर देता है - चेहरे पर बिना किसी हाव-भाव के उसने जवाब दिया।

निहार को कॉफी के प्याले रखते हुए देखकर मैंने पूछा- बेटा? मां...वो... - निहार कुछ हिचकिचा रहा था। रिमी ने खिलखिलाते हुए कहा - आंटी ! इसे मैंने सीखा दिया है। हंसती हुई वह लड़की आकर्षक लग रही थी।

फिर निहार उसे छोड़ने होस्टल चला गया। इस दरम्यान पतिदेव पूरा समय अखबार में नजरे गड़ाए बैठे रहे।

उनके जाने के बाद मन में उथल-पुथल मची थी। समझ गयी थी, ये हमारे घर आने वाली 'गृहलक्ष्मी' है।

ढेर सारी कशमकश लिए मैं अपने कमरे में आकर लिखने बैठी थी।

कहानी का कोई किरदार आगे बढ़ने को तैयार ही नहीं था।

मैं गुस्से से चिल्लाई-मैं तुम सब को बदल दूँगी और सभी पन्नों को फाड़कर नीचे बिखेर दिया। सभी किरदार उन फटे हुए पन्नों से झांकते हुए हंस रहे थे। मेरी आंखों में आंसू थे। मैं निढाल सी गिर पड़ी।

फिर कहना न होगा, अगले छह महीने निहार और रिमी के विवाह में गुजर गये। फिर अचानक एक दिन पतिदेव को इस दुनिया के चक्रव्यूह से मुक्ति मिल गई। मैं नितांत अकेली रह गई।

मगर नहीं, सोचती मेरा बेटा मेरे साथ है। कुछ दिन इसी तरह बीत गये।

तभी एक दिन निहार ने कहा - मां ये घर काफी छोटा है और पुराना भी हो गया है। हम अपने दोस्तों को यहां चाय पर भी नहीं बुला पाते। इस घर से कीड़े-मकोड़े निकलते हैं। रातभर रिमी को नींद नहीं आती। इसे नये तरीके से बनाकर इसमें मैं और पैसा खर्च नहीं करना चाहता।

तब तू क्या चाहता है?

मैं एक नया फ्लैट लूँगा? उसमें हम सभी चले जाएंगे।

और इस घर का क्या?

मां इसे बेच डालो !

मगर बेटा ये तो तेरे पापा की निशानी है और चालीस वर्षों तक इसे मैंने सींचा है। इसे इतनी जल्दी कैसे बेच दूँ ?

मां तुम सोचकर देखना, यह घर रहने लायक नहीं है।

रात को मैं सोच रही थी और पशोपेश में थी, जिस घर में मैंने चालीस वर्ष गुजारे हैं, जो मेरे सुख-दुख में समान रूप से भागीदार है, उसे इतनी जल्दी कैसे त्याग दूँ ?

तभी निहार के कमरे से जोर-जोर से तकरार की आवाज सुनाई पड़ी।

निहार तुम समझते क्यों नहीं ?

तुम मां को हमारे साथ क्यों ले जाना चाहते हो ?

तो वह अकेली यहां कैसे रहेंगी ?

और नये फ्लैट के लिए पैसे भी तो चाहिए, उतना अभी हमारे पास कहां है ?

मगर मेरी गृहस्थी का क्या ? मैं भी तो अपनी मर्जी, अपनी पसंद से गृहस्थी चलाना चाहती हूँ ! फ्लैट का क्या है ?

वो तो कुछ दिनों के बाद भी हो सकता है। अभी हम किराये के घर में रह लेंगे। जहां हमारा खुद का संसार होगा।

देखो निहार ! मेरी मां भी तो अकेली रहती है उसने भी तो मुझे पढ़ा-लिखा कर बड़ा किया है, और न जाने कितने त्याग किये हैं, मगर वह तो हमारे साथ नहीं रहना चाहती, तुम क्यों अपनी मां को हमारे साथ जाने की जिद कर रहे हो ?

रिमी, जरा आहिस्ता बोलो, बगल में मां का कमरा है।

मगर शायद रिमी यह चाहती थी कि मैं सब बातें सुनूं और उसका यह मकसद पूरा हो चुका था।

रात भर मेरे कमरे की बत्ती जलती रही। मैं एक पल के लिए भी सो न पायी। डायरी खोलकर देखा, कहानी के फटे पन्ने उसी प्रकार पड़े हुए थे। पंखे की हवा से पन्ने चारों तरफ बिखर गए, जिन्हें उठाने की जहमत मैंने न उठायी।

सुबह सब कुछ सामान्य था। मैंने घर बेचने से मना कर दिया था।

बेटे, तुम लोग अपनी सुविधा के अनुसार किराये के फ्लैट में रहो या नये घर में जाओ, मैं तुम लोगो से मिलने आया करूँगी।

जी मां, जैसी तुम्हारी मर्जी ? कहकर पांव छूकर दोनों अपने नये घोंसले बनाने चले गए थे।

इतने वर्षों के बाद अगली सुबह मैंने एक तरफ झुक कर खिड़की से बाहर देखने की कोशिश की। हरियाली की चादर दूर-दूर तक फैली हुई थी। दूर कुछ मकान, कुछ झोपड़ियां ऐसी दिख रही थीं, मानो बिस्तर पर मां की बिछाई हरी चादर पर वो दाग, जो बच्चों के खाना गिर जाने का बन आए हों।

क्या मैंने बेटे के साथ न जाकर ठीक किया ? हां ! हां ! ठीक किया ! कहते हुए फटे पन्नों के किरदारों से आवाज आयी। सभी किरदार जी उठे थे।

मैं लिखने लगी और लिखते चली गई। अपने किरदारों को कहानी में ढालने लगी और कहानी आगे बढ़ती चली गई।

प्रकृति द्वारा बिछी फूलों वाली हरी चादर पर सूर्य की खिड़की से झरता, मद्दम-मद्दम प्रकाश।

आसमान में पंछी उड़ रहे थे, मैं भी उनके साथ उड़ रही थी। मैं अपनी उड़ान को थमने नहीं देना चाहती थी। क्योंकि फिर से शुरू की हुई जिन्दगी में इस बार दूसरों से ज्यादा खुद का ख्याल रखना होगा।

ख्वाहिशें कुछ बाकी न बची,
कुछ फुरसत के पल निकालना है।
इस महफिल में खुद को तलाशना है,
फिर शुरू से शुरूआत करना है।

रूपा भट्टाचार्य
पत्नी-श्री शुभाशिष भट्टाचार्य,
सेवानिवृत-उप मुख्य परिचालन प्रबंधक

सरजू की कहानी

सरजू आज बड़े दिनों बाद अपने गाँव आ रहा था। जैसे-जैसे वह गाँव के नज़दीक पहुँच रहा था, उसका मन आनंदित भी हो रहा था और आशंकित भी। आनंदित इसलिए कि वह सालों बाद अपने गाँव लौट रहा था और आशंकित इसलिए कि पता नहीं उसके अपने दोस्त या गाँववाले उसे पहचानेंगे भी या नहीं।

सरजू सोचते-सोचते गाँव के प्रवेश-द्वार के पास पहुँच गया था। आज जहाँ पर प्रवेश-द्वार बना हुआ है, वहाँ पहले विशाल बरगद का पेड़ हुआ करता था, जिसकी मोटी और बड़ी लताओं में सरजू अपने दोस्तों संग खेला करता था। उसी बरगद के पेड़ में झूलते हुए एक दिन वह अचानक नीचे गिर गया था। उस दिन घर पर उसके पिताजी ने खूब डाँटा था। तब उसकी माँ ने यह कह कर कि बच्चा ही तो है, अभी नहीं खेलेगा तो कब खेलेगा? पिताजी की डाँट से उसे बचा लिया था और सरजू अपनी माँ से लिपट कर ऐसा महसूस कर रहा था जैसे माँ ने उसका पक्ष लेकर उसे बहुत बड़ा इनाम दे दिया हो।

बचपन की बातों को याद करके सरजू का मन भारी होने लगा था, खासकर माँ की याद आने से। सरजू कक्षा पाँच में था तभी उसके पापा का देहांत किसी बीमारी के कारण हो गया था। सरजू को अच्छे से याद भी नहीं कि उन्हें क्या हुआ था।

सरजू बचपन से ही पढ़ाई में अच्छा था। स्कूल में टीचर और बच्चे सब सरजू को बहुत पसंद करते थे। पर शायद ईश्वर ने उसके भाग्य में कुछ और ही लिखा था। बचपन में ही पिता का साया सिर से उठ गया। घर में अब कमाने वाला कोई नहीं था तो पैसों की दिक्कत होने लगी। इस कारण से सरजू को अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ी।

माँ गाँव में ही कुछ छोटा-मोटा काम करके घर चलाती थी। सरजू भी घर में माँ का हाथ बँटाता। जैसे-तैसे समय बीत रहा था कि एक दिन सरजू की माँ भी सरजू का साथ छोड़कर इस दुनिया से चली गई। सरजू उस दिन बहुत रोया। अब वह बिल्कुल अकेला रह गया था। अब तो उसे प्यार करने वाली माँ भी चली गई थी।

सरजू करता भी तो क्या करता? वह अब भी बच्चा ही था - अभी वह 12 साल का ही था। वह दूसरे बच्चों को देखता कि उनके साथ उनके माँ-पिताजी हैं, पर सरजू अब बिल्कुल अकेला था। उसे जब अपनी माँ की बहुत याद आती थी, तो वह उसकी तस्वीर को सीने से चिपका कर रो लेता।

आज सुबह ही उसने पानी में भींगते हुए मंगल चाचा के खेत में काम किया था। सरजू बुखार में तप रहा था, पर उसकी पीड़ा कौन देखता? आज माँ होती, पिताजी होते, तो बात कुछ और होती।

बुखार की तपिश और बदन के दर्द के मारे सरजू की आँखें बार-बार बंद हो रही थीं और कब उसकी आँख लग गई, पता ही नहीं चला। तभी उसे बाहर कुछ महसूस हुआ - शायद कोई आवाज़ दे रहा हो, पर सरजू चाह कर भी अपनी आँखें नहीं खोल पा रहा था। तभी सरजू के कानों में एक आवाज़ गूँजी -

सरजू बेटा, कहाँ हो सरजू? सरजू बेटा...!

बाहर से आती हुई आवाज़ कुछ जानी-पहचानी सी लगी। सरजू आँख खोलने की असफल कोशिश कर रहा था। तभी वह आवाज़ धीरे-धीरे पास आ गई और किसी ने सरजू के सिर पर प्यार से हाथ फेरा। इस बार सरजू की आँखें थोड़ी खुलीं।

अरे, आप?! - सरजू चौंकते हुए बोला - आप यहाँ कैसे?

सरजू ने देखा - ये तो मदारी काका हैं। मदारी काका हमेशा गाँव में आते रहते थे। उनके साथ एक बंदर भी हुआ करता था, जिसका खेल दिखाते और बांसुरी बजाते। गाँव के सभी लोग

मदारी काका की बांसुरी की धुन से मोहित हो जाते थे - कि अब खेल दिखाने का अपना बंदर लेकर आ गए हैं।

मदारी काका से सरजू की दशा छुपी नहीं थी। उन्हें उसके माँ और पिताजी के न होने के बारे में सब पता था। काका जब भी खेल दिखाने गाँव आते, सभी बच्चों के लिए कुछ न कुछ ज़रूर लाते, पर सरजू के लिए उनके मन में अलग ही प्रेम था।

मदारी काका सरजू के लिए शहर से कभी नए कपड़े भी ले आते। काका को सरजू भी बहुत सम्मान देता था। काका ने सरजू की तपती देह पर हाथ रखते हुए कहा - सरजू बेटा, तुम चलो मेरे साथ। तुम्हें अब यहाँ अकेले नहीं रहना हि। मैं जानता हूँ कि यह घर, यह गाँव, अपनों की यादों को छोड़कर मेरे साथ चलने में तुम्हें दिक्कत तो होगी, पर मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ चलो। वहाँ शहर में मैं भी अकेला ही हूँ और यहाँ तुम भी अकेले ही हो। तो क्यों न हम दोनों एक-दूसरे का दर्द बाँट लें।

सरजू पहले तो मना करता रहा कि वह गाँव छोड़कर अपने दोस्तों, घर, माँ-पिताजी की यादों को छोड़कर न जाए। पर काका के जिद के सामने सरजू को शहर जाना ही पड़ा।

मदारी काका शहर में एक कमरे के मकान में रहते थे। सबसे पहले उन्होंने सरजू को पास के ही एक डॉक्टर को दिखाया, उसके लिए नए कपड़े लाए, दवाइयाँ लीं। धीरे-धीरे सरजू की तबीयत में सुधार होने लगा। अब सरजू पहले से बेहतर हो गया था। मदारी काका ने सरजू के पढ़ाई की भी व्यवस्था कर दी।

अब सरजू रोज़ स्कूल जाता और मदारी काका बंदर का खेल दिखाने कहीं चले जाते। सरजू स्कूल से आकर घर का कुछ काम कर लेता। दोनों का साथ एक-दूसरे को ताकत देता था।

धीरे-धीरे मदारी काका ने कुछ पैसों का इंतज़ाम करके अपने काम को ही बढ़ाया। अब उनका एक मनोरंजन ग्रुप था जो दूसरे शहरों में जाकर भी खेल दिखाता।

सरजू आज कॉलेज में है। आज उसका 20वाँ जन्मदिन है। घर पर सरजू के दोस्त आए हुए हैं। काका भी बर्थडे के लिए सुबह से भागदौड़ कर रहे हैं।

सबके चले जाने के बाद मदारी काका ने सरजू से कहा - देखो बेटा, अब हमारे ग्रुप का काम बढ़ गया है। मैं चाहता हूँ कि अब इसे तुम संभालो, अब मुझसे यह सब नहीं होता।

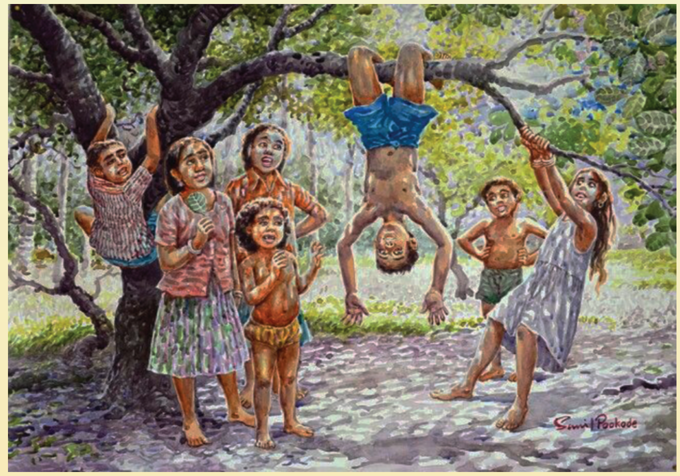

सरजू ने भी सहमति में सिर हिला दिया।

सरजू को अब शहर में सभी जानने लगे थे। मदारी काका के प्यार, समर्पण और सरजू की मेहनत ने उन्हें कामयाबी की ऊँचाइयों पर पहुँचा दिया।

आज सरजू एक बड़े सर्कस कंपनी का मालिक हो गया था, पर अब काका उसके साथ नहीं थे। आज काका की पुण्यतिथि थी।

सरजू आज जो भी था, उन्हीं के समर्पण और प्यार के कारण था। सोचते-सोचते सरजू अपने गाँव के पुराने घर के पास पहुँच गया था।

आज सरजू ने काका की याद में गाँव में एक स्कूल बनवाया था, जिसका आज शुभारंभ करने के लिए सरजू गाँव आया था।

आज उसे तमाम पुरानी यादें रुला रही थीं - माँ का प्यार, पिताजी की डाँट, और मदारी काका के साथ की वो तमाम यादें।

आज सरजू की आँखों से झर-झर आँसू बह रहे थे और वह ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था कि गाँव के किसी भी घर में कोई सरजू जैसा बच्चा तकलीफ में न रहे।

उधर सभी सरजू जिंदाबाद के नारे लगा रहे थे और इधर सरजू - सब कुछ होते हुए भी - आज वहीं अकेला खड़ा सब कुछ महसूस कर रहा था ।

श्रीमती सरला शामकुले
पत्नी श्री विकास जी. शामकुले
उप मुख्य परिचालन प्रबंधक/सा.

भारत की विख्यात लोक कलाएं - (चित्रकला विशेष)

अनेकता में एकता की सचित्र झांकी प्रस्तुत करता हुआ हमारा देश भारत, बड़ी तेजी से विश्व पटल पर 'सुपर पावर' देश के रूप में उभर रहा है।

भारत देश की बोली-बानी, पहनावा, खान-पान, संस्कृति-संस्कार, संयुक्त परिवार की महत्ता, धर्म-आचार और हमारी जीवन जीने की शैली को पाश्चात्य देशों ने 'आदर्श' जीवन कह कर अपनाया है।

हमारे देश की आत्मा गांवो में बसती है, लोक कलाएं, लोक संस्कृति और लोक रीति रिवाजों की एक बड़ी मोहक दुनिया है। एक लोक कहावत है - एक कोस पर पानी बदले - तीन कोस पर बानी भारत का हर प्रांत, हर प्रदेश, हर राज्य अपनी विविध परंपराओं को, विविध संस्कृतियों की धरोहर को सहेजे-समेटे इनकी जीवंतता को अक्षुण्ण रखे हुए है।

आधुनिकता और पाश्चात्य प्रभाव के बावजूद ग्रामीण परिवेश और ग्राम्य जनजीवन ने अपनी लोक संस्कृति को बदलते माहौल ओर स्वरूप के बदलाव के साथ न केवल जिंदा रख है, बल्कि विश्व पटल पर भी पहचान बनाने की कोशिश की है, जो कि एक सराहनीय प्रयास है।

इस लेख के माध्यम से, आइए हम लोक चित्र कलाओं के दुनिया की सैर करते हैं। हमारे चित्र या पेंटिंग्स की विदेशों में बड़ी धूम और मांग है। कुछ प्रमुख लोक चित्र विधाएं हैं :

मधुबनी(बिहार): मिथिला अंचल की शादियों में 'कोहबर' बनाने की कला सदियों पुरानी है। आसानी से और प्रकृति में उपलब्ध रंगों से शिव-पार्वती, राधा-कृष्ण, सूर्य-चन्द्र, घोड़े-हाथी, पेड़-पक्षी जैसे चित्र उकेरे जाते हैं, और कन्या या वर-वधू को इस कमरे में विवाहोपरांत लाया जाता है, सालियों-ननदों द्वारा वैवाहिक रस्मो रिवाज इसी कोहबर में संपन्न किए जाते हैं।

दीवारों से उतर कर आज-कल मधुबनी की कला कपड़ो और कागज पर भी दिखती है। आधुनिक साड़ियों में मधुबनी

आर्ट की मांग बढ़ती जा रही है। पेंटिंग के रूप में गृह सज्जा में भी मधुबनी की खासी पैठ है।

पिचवई (राजस्थान): नाथ द्वारा मंदिर के श्री कृष्ण की कपड़े पर बनी पेंटिंग 'पिचवई' पेंटिंग के नाम से मशहूर है। कृष्ण, गोपिकाएं, गाय और यमुना तट की झांकियां भी इस स्वरूप की पेंटिंग में उकेरी जाती है। आंतरिक गृह सज्जा में इन पेंटिंग्स को बहुत पसंद किया जा रहा है।

पट्टचित्र (ओड़िशा): ओड़िशा राज्य न केवल पुरी समुद्रतट, कोणार्क सूर्य मंदिर और कटकी, सम्बलपुरी साड़ी के लिए, बल्कि पट्टचित्रा चित्रकला के लिए भी विख्यात है। संस्कृत भाषा से उत्पन्न है शब्द पट्टा यानी कपड़े का कैनवस और चित्रा यानी चित्र। इस विधा में नैचुरल क्लर्स या रंगों का प्रयोग किया जाता है। सबसे पहले सिल्क के कपड़ों पर लाल या पीले रंग की रूप रेखा खींच कर रंगों से भर कर आकृतियां उकेरी जाती है। पट्टचित्र में खास तौर पर बलभद्र-सुभद्रा-जगन्नाथ, राधाकृष्ण की युगल छवि, महाभारत युद्ध के हाथी-घोड़े पर सवार राजाओं और सेना के साथ-साथ कोणार्क मंदिर, पुरी आदि चित्र ही विशेष होते हैं। 'रघुराजपुर' शहर पट्टचित्र कला के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है।

कालीघाट पाटकला (पश्चिम बंगाल): 19वीं सदी में

कोलकाता के कालीघाट में रहने वाले ग्रामीण प्रवासियों द्वारा कालीघाट पाट कला की शुरूआत की गई है। इस कलाकृति में हिंदू देवी-देवताओं विशेषकर मां दुर्गा उनके नव रूप, रामायण, महाभारत के चरित्र और हिंदू पौराणिक कथाओं पात्रों के चित्रों के चित्रण की बहुलता थी।

पश्चिम बंगाल भारतवर्ष की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में प्रसिद्ध है। बंगाली कला, और संस्कृति की छवि पश्चिम बंगाल के पर्व-त्यौहारों, दुर्गा पूजा एवं रोज के जीवन में भी अपनी पूरी जीवंतता और रंगीनी लिए हुए शामिल हैं।

पश्चिम बंगाल की महिलाएं जमीन पर चावल को पीस कर बनाए गए रंग से 'आलपोना' या रंगोली बनातीं है। दुर्गा पूजा के अवसर पर 'आलपोना' की मोहक कृतियां हर पूजा पंडाल में दृष्टिगोचर होती है। कालीघाट पाटकला बनाने वाले पटुवा मिदनापुर जिले से आते हैं। गांवो के घरों के बाहर लीपी हुई मिट्टी के दीवारों पर स्थानीय कलाकारों द्वारा मंगल काव्य और देवी-देवताओं के धार्मिक चित्रों से सुघड़ चित्रकला बनाई जाती है।

तंजौर चित्रकला (तंजावुर, दक्षिण भारत): 1600 वर्ष पुरानी, प्राचीन भारतीय लोक कला तंजौर चित्रकला का उदभव दक्षिण भारत से हुआ है। बेशकीमती सोने की पन्नी, semi precious पत्थरों और चमकीले अवयवों से देवी-देवताओं की भव्य एवं नयनाभिराम कलाकृति अपने आप में बेजोड़ और अद्भुत है। कृष्ण के बाल रूप, मां दुर्गा एवं तिरूपति बालाजी के चित्र तंजौर चित्रकला में विशेष रूप से पसंद की जाती है। दक्षिण भारत का तंजावुर प्रांत ने इस कला के प्राचीन सौंदर्य को अब तक अपनी संस्कृति के पहचान के रूप में सहेज रखा है।

कलमकारी (आंध्र प्रदेश): आंध्र प्रदेश के मछलीपट्टनम की पारंपरिक पेंटिंग शैली, जिसे कलम की आकृति जैसे नुकीले बांस से कपड़ों पर विभिन्न प्रकार के ज्यामितीय आकार उकेर कर बनाया जाता है। कपड़ों को vegetable colours से रंग कर चटक लाल या नीले रंग की प्रधानता लिए हुए आकृतियाँ बनाई जाती है।

वर्ली चित्रकला (महाराष्ट्र): महाराष्ट्र की वर्ली आदिवासी कला जिसमें लाल या काली पृष्ठभूमि पर मनुष्यों, घोड़ों, पक्षियों आदि के चित्र बनाए जाते हैं। इन चित्रों की विशेषता होती है इनका गोलाकार या सर्पिल रूप में चित्रण। कई बार एक साथ महिलाओं एवं पुरूषों द्वारा एक दूसरे का हाथ पकड़ कर संगीतकार या आग के अलाव के इर्द गिर्द नृत्य करते हुए उकेरी गई आकृतियां बड़ी मनोहारी लगती है।

गोंड चित्रकला (मध्य प्रदेश): मध्य प्रदेश के गोंड समुदाय के लोग लगभग 1400 वर्षों से इस कला शैली की धरोहर को अब तक अपनी विरासत के रूप में अपनाए हुए हैं। दैनिक जीवन, वनस्पति, जीव-जन्तु, उत्सवों, प्राकृतिक और ऐतिहासिक कथाओं, घटनाओं को बेहद शानदार, जीवंत और रंगीन रूप में प्रस्तुत किया जाता है, गोंड चित्र शैली में।

यह कला रूप गोंड किंवदंती और गोंड कला के ध्वज वाहक जंगढ़ सिंह श्याम के प्रयासों से सफल और प्रसिद्ध हुआ।

भारत सरकार द्वारा 'ललित कला अकादमी' की स्थापना के बाद इन लोक कलाओं को देश-विदेश में एक विशेष और अलग पहचान मिली। चित्रकला क्षेत्र में ख्यातिलब्ध जनों को सरकार द्वारा सम्मानित भी किया जाता है।

निकिता बोस

सुपुत्री-किरण बोस,

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

अंत की शुरूआत

पन्द्रह हजार वर्ष पूर्व,
हुई थी एक भविष्यवाणी,
माया सभ्यता ने कही,
महाविनाश की कहानी।

उस कथा के अनुसार,
पृथ्वी का होगा अन्त,
विलुप्त होंगे मानव,
चाहे हो साधू या संत।

महाप्रलय की तिथि थी 2012,
तब सरकारों ने एक निर्णय लिया,
क्यों न बनाएं एक कश्ती,
और बसाएं एक नवीन दुनिया।

तो कार्य शुरू हुआ 2009 में,
अलग-अलग देशों का संघर्ष,
बना लाया, 'आर्क',
जिससे बचता मानववर्ष।

आखिरकार, आया वह दिन,
प्रलय थी निश्चित,
अनन्त आंधी-वर्षा-तूफान में,
हो गई मानवजाति विकृत।

परन्तु कुछ भाग्यशाली व्यक्ति,
जिनका मैं भी थी एक भाग,
चढ़े चमत्कारी नौका पर,
गाने नवजीवन का राग।

सन् 0009 (2021)
मुझे तथा मेरे साथियों को,
मिला रहने का स्थान,
अफ्रीका निकट 'मैडेगास्कर' में,
फिर उठ चले इन्सान।

मेरे पिता थे एक वैज्ञानिक,
नए विश्व में था उनका योगदान,
नूतन जीवाणुओं की खोज ने,
उन्हें बनाया महान।

मेरे चौबीसवें जन्मदिन पर,
एक खुशखबरी आई,
शनि ग्रह पर जाने वाले यान में,
मेरी होनी थी चढ़ाई।

मैं खुशी से फूली न समाई,
अंतरिक्ष में जाना था मेरा सपना,
ग्रहों तथा तारों के विश्व को,
मैं समझती थी अपना।

जब 1 फरवरी 0010 (2022)
मैं चढ़ी, 'वोयेजर 25' पर,
मेरे हृदय में थी, प्रफुल्लित खुशी,
और एक निम्न डर।

मैंने अंतरिक्ष के सर्वसुन्दर ग्रह पर,
भारत का ध्वजा फहराया,
शनि के छल्लों ने,
चलाई मुझपर अपनी माया।

उस ग्रह पर रही मैं 3 वर्ष तक,
लगा, इसी क्षण की थी प्रतीक्षा,
तब मैंने खोली,
शनि ग्रह की पहली कक्षा।

सन् 0032(2033)
आज मैं अपने जीवन की,
असीम बुलन्दियों पर हूँ,
मेरे विद्यालय, 'एनाग्ताम',
की उन्नति से प्रसन्न हूँ।

मैं नए विश्व की,
एकमात्र ऐसी एस्ट्रोनॉट थी,
जो शनि ही नहीं, XENA- तक भी गई।

आज अपने सैंतालिसवें वर्ष में,
मैं नव यान की सह-चालिका हूँ,
और अब भी,
अपने विद्यालय में पढ़ाती हूँ।

कल मैं सोचती थी,
प्रलय के पश्चात कैसे ढूंढूंगी अपनी राह,
पर अब मुझे पता है,
'जहां चाह वहां राह'

संस्कृति चित्रांश
सुपुत्री-श्री राजेश कुमार,
पूर्व प्रधान मुख्य संरक्षा अधिकारी

भारतीय संस्कृति में मातृत्व का महत्व

हर रिश्ते में मिलावट देखी,
कच्चे रंगों की सजावट देखी,
लेकिन सालों साल देखा है माँ को,
उसके चेहरे पर ना कभी थकावट देखी,
ना ममता में कभी मिलावट देखी!

किसी की मनोभाव को व्यक्त करती उपरोक्त पंक्तियां विश्व की और विशेषकर भारतीय समाज के संदर्भ में माताओं के अपने संतान के प्रति भावनाओं को सहज ही चित्रित करती हैं। एक जननी के रूप में माँ स्वार्थ, कपट छल, दम्भ से परे एक निश्छल माँ ही होती है। भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम और समृद्ध संस्कृति में से है। भारतीय समाज में माँ की ममत्व को समुचित पहचान प्रदान करते हुए उचित ही कहा गया है कि भगवान चूँकि हर जगह नहीं हो सकते इसलिए भगवान ने माँ की सृष्टि की जो ईश्वर तुल्य होकर अपनी संतान को बिना शर्त ममता प्रदान करती है। संतान के लिए माँ का प्यार बिना किसी प्रकार की अपेक्षा या प्रतिफल के होता है। अपने संतान के मोह और ममता के लिए एक माँ हर प्रकार के त्याग और समझौते करने को तत्पर रहती है। वह त्याग और क्षमा की ऐसी प्रतिमूर्ति होती है जो अपने संतान के सौ गुनाहों को भी माफ कर सकती हैं।

भारतीय समाज के संदर्भ में मातृत्व का एक अपना ही एक अहम स्थान है। भारतीय नारियों के संदर्भ में कहा जाए तो मातृत्व की प्राप्ति ही उसकी नारीत्व को परिपूर्ण बनाती है। माँ बनना उनके लिए एक अकथनीय और अदभुत एहसास होता है। वैसे देखा जाए तो माँ का अस्तित्व हर मानव प्राणी के लिए मायने रखता है क्योंकि कोई भी बच्चा अपना पहला सांस, अपना पहला भोजन और अपने अस्तित्व के लिए आवश्यक सभी क्रियाएं माँ की कोख में ही संपन्न करता है। यहां तक कि वेद पुराणों और धर्मग्रंथों में भी कहा गया है कि ईश्वर को धरती पर अवतार लेने के लिए माँ की आवश्यकता पड़ी। जन्म के पूर्व और जन्म के बाद भी संतान की देखभाल और लालन पालन में माँ की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

माँ हर बच्चे के लिए एक बहुत ही खास और महत्वपूर्ण व्यक्ति होती है। कोई भी बच्चा दुनिया को खासकर अपनी माँ की वजह से ही देख पाता है। संतान के जन्म से लेकर अपने अंतिम सांसों तक वह अपने बच्चों का भला ही चाहती हैं। माँ अपने बच्चे के लिए एक दोस्त, माता-पिता, मार्गदर्शक और शिक्षक होती है। वह इस दुनिया में प्यार, ईमानदारी, सच्चाई और करुणा का प्रतीक है। इसका जीवंत उदाहरण हमारे दैनिक जीवन में सहज ही देखने को मिल सकती है, जहां हर घर की कहानी लगभग एक समान ही होती है। माँ, हर सुबह,हर एक दिन सबसे पहले जाग जाती है। फिर वह अपने संतानों को जगाती हैं और उन्हें स्कूल के लिए तैयार करती हैं। वह हर दिन अलग-अलग मेनू के साथ बच्चे के लंच बॉक्स का ख्याल रखती है। वह उन्हें बस स्टॉप पर छोड़ती है। बस के पीछे से उसका हाथ हिलाना बच्चे को आश्वस्त करता है कि वह हमेशा उसके साथ मौजूद है। वह बच्चे की पढ़ाई और होम वर्क में उसकी सहायता करती है। जब वे बीमार पड़ते हैं तो माँ ही रात-रातभर जागकर उनका ख्याल रखती हैं। वह बच्चे की शिक्षा, स्वास्थ्य और खुशी के बारे में चिंता करती हैं। इस प्रयास में वह कई बार अपनी जरूरतों से समझौता भी करती है,

अपनी सुख-सुविधाओं को नजरअंदाज करती हैं और सुनिश्चित करती है कि संतान की जरूरतें पहले पूरी हों। वह हमेशा बच्चों को जीवन में सही चीजें करने और सही दिशा चुनने के लिए मार्गदर्शन करती है। कई बार, वह खुद भी एक बच्ची बन जाती है और उनके साथ पूरी तरह से आनंद लेती है। इस प्रकार माँ अपने बच्चे की पहली मित्र, स्कूल और शिक्षिका होती है क्योंकि बच्चा जब छोटा होता है तो उसकी सारी दुनिया उसकी माँ ही होती है और बचपन में कई सारी बातें माँ से ही सीखते हैं। माँ की ममता ऐसी होती है कि बच्चे की तोतली बातों को भी एक माँ अच्छे से समझ लेती है और उनका निवारण करती है।

माँ सांस्कृतिक विरासत को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वह पारंपारिक कहानियां, लोककथाएं और धार्मिक ग्रंथों की कहानियों के मध्यम से बच्चों में सांस्कृतिक मूल्य, नैतिक शिक्षा का विकास करती है और उन्हें अपने पूर्वजों के इतिहास से भी परिचित कराती है। वे धार्मिक अनुष्ठानों और रीति रिवाजों के माध्यम से बच्चों में संस्कृति का बीजारोपण करती हैं। बच्चों को नृत्य और संगीत जैसे कलाओं से भी जोड़ती हैं जिससे सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण होता है।

माँ अपने सभी रिश्तेदारों के बीच संबंध को मजबूती प्रदान करती है और पति के ताकत का स्तंभ होती हैं। अपने घरेलू जिम्मेदारियों के अतिरिक्त आज के समय में कई घरों की माताएं आर्थिक रूप से स्वावलंबी भी हैं। वे नौकरी पेशा या कारोबार से जुड़े होने के वावजूद घर बाहर की जिम्मेदारियों को बखूबी निभाती हैं। वे अथक सहनशक्ति की स्वामिनी होती हैं। अपने व्यवसाय और घर दोनों में रोज़मर्रा की चुनौतियों और बाधाओं को पार करने की उनमें अपार भावनात्मक और शारीरिक शक्ति निहित होती है।

हमारे जीवन में माँ का महत्व उतना ही है जितना हमारी सांसों का महत्व हमारे जीवन के लिए है। माँ हमारा पालन-पोषण करके हमें सक्षम बनाती है, हमारे शरीर को बल प्रदान करती है जिससे हम अपने भविष्य को संवारने की क्षमता प्राप्त करते हैं। माँ हमारी प्रथम गुरु है। वह हमें हमेशा सच बोलने और अनुशासन के साथ जीना सिखाती है। वह परिवार में सबका खयाल रखती है। वह अपने बच्चों के लिए अपने सुखों को त्याग देती है। गलती होने पर प्यार से समझाती है। अपने बच्चे के लिए सारी दुनिया से लड़ सकती है। अपने बच्चे की अच्छे कार्य की सबसे ज्यादा प्रशंसा करती है।

माँ की ममता और महत्ता समंदर की अथाह गहराईयों की तरह गहरी हैं जहां तक पहुँच पाना उतना आसान नहीं है। बस उनकी ममता को अनुभवों के आधार पर अहसास ही किया जा सकता है। उसके त्याग और बलिदान का कोई मोल नहीं हो सकता और न ही कोई संतान उसके कर्जों से उऋण हो सकता है। उनकी महत्ता को बस बकौल कोई कवि कह सकते हैं :

घर का कोना कोना अम्मा, भरा भरा सा लगता है,
तुम रहती हो घर में ये घर, हराभरा सा लगता है।
अपनी आंखों से ही तुम, सबके मन पढ़ लेती हो,
बांध आंसुओं को पल्लू में, हर एक दुख सह लेती हो।
हर बड़ा दुख तेरे कारण, ज़रा ज़रा सा लगता है।
घर का कोना कोना अम्मा, भरा भरा सा लगता है।

माना माँ की बोली कभी कभी कड़वी,खारी होती है
पर माँ हर गुड़ शक्कर,हर मीठे से प्यारी होती है
चाहे अनपढ़ ही क्यूं ना हो कोई भी माँ जमीन की
पर उसकी सीखों में जीवन जीने की बात छुपी सारी होती है

कीर्ति किरण बागे
वरिष्ठ अनुवादक

निवेश : सामान्य अवधारणा

एक सामाजिक प्राणी होने के साथ-साथ मनुष्य एक आर्थिक प्राणी भी है। सृष्टि के आरंभ से ही देखा जाए तो मुनष्य स्वाभावत: ही आर्थिक गतिविधियों में संलिप्त रहा है। भले ही वे परिमाणी रूप से नगण्य या अत्यंत सूक्ष्म स्तरीय रहे हों। पाषाणकालीन शिकारी जीवन से कृषि प्रधान जीवन और आज के आधुनिक युग तक के सफर में मनुष्य का स्वभाव संचयी प्रवृति का ही रहा है। मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ मुनष्यों की आवश्यकताएं भी बढ़ती गई और उसी अनुपात में धन संचय की प्रवृति भी कहीं अधिक बलवती होती गई। विभिन्न समय और काल में धन संचय का अपना अलग-अलग स्वरूप रहा। परंतु आज के समय में यह अवधारणा तर्क-वितर्क की कसौटी में कसकर कहीं अधिक परिशोधित व संवर्द्धित रूप में विकसित हुआ है। मनुष्य एक बुद्धिजीवी प्राणी है। वह विभिन्न विषयों पर तर्क और विश्लेषण कर सकता है। वह अमूर्त विचारों को समझ सकता है, चिंतन कर सकता है और अपने भविष्य की अनिश्चतताओं का आकलन कर सकता है। साथ ही वह भावी समस्याओं के समाधान का उपाय भी कर सकता है। मनुष्य की इसी बुद्धिजीविता का प्रतिफल है निवेश की अवधारणा। मनुष्य स्वभाव से ही आकांक्षी होता है जिसकी पूर्ति के लिए उसे धन की आवश्यकता होती है। आज के समय में निवेश की अवधारणा इतनी व्यापक हो गई है कि हममें से अधिकांश लोग अक्सर इसके गणितीय पहलुओं को समझ ही नहीं पाते या कई बार हम इसे समझने के चक्कर में पड़ना ही नहीं चाहते। आम तौर पर मैं भी इन उलझनों में नहीं पड़ना चाहता कि अपनी आमदनी के कुछ हिस्से को किस क्षेत्र में निवेश किया जाए। परिणामत: अधिकांश लोगों के तरह पारंपारिक बचत योजनाओं में ही निवेश का विकल्प ढूंढ़ते हैं। जब कभी हमारे पास बचत योग्य कोई अतिरिक्त राशि आ जाती है तो हम सोचने लगते हैं कि इसे किस मद में निवेश किया जाए। हलांकि, आज के समय में हमारे पास निवेश के कई विकल्प मौजूद हैं परंतु कई बार पर्याप्त जानकारी के अभाव में और सुरक्षा के लिहाज से भी हम पारंपारिक निवेशों को ही प्राथमिकता देते हैं जहां जोखिम कम होता है और स्वाभाविक रूप से उनका प्रतिफल भी कम होता है। आजकल इंटरनेट की सहज उपलब्धता ने निवेश के विकल्पों के संबंध में जानकारी जुटाने का आसान रास्ता मुहैया कराया है। इन्हीं संसाधनों के उपयोग से मैंने भी थोड़ी बहुत जानकारी एकत्रित करने का प्रयास किया है जिसे पर्याप्त तो नहीं कहा जाएगा तथापि निवेश विकल्पों के परिचायक के तौर पर लिया जा सकता है।

निवेश आखिर है क्या? आर्थिक परिप्रेक्ष्य में निवेश का तात्पर्य है अपनी आय के एक विशेष हिस्से को किसी ऐसी योजना या संपत्ति में व्यय करना जिससे भविष्य में अतिरिक्त आय या संपत्ति सृजित की जा सके। इस अवधारणा में यह अंतर्निहित है कि निवेशित धन या संपत्ति का मूल्य बढ़ेगा या उससे अतिरिक्त प्रतिफल प्राप्त होगा।

निवेश की आवश्यकता कई कारणों से होती है। एक ओर तो यह संपत्ति बढ़ाने और वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता

करती है वहीं दूसरी ओर यह पैसे को मुद्रास्फीति से आगे निकलने में मदद करता है और एक स्थिर आय प्रदान करने में सहायक होता है। निवेश योजनाएं अप्रत्याशित वित्तीय आकस्मिकताओं से हमें सुरक्षा प्रदान करती हैं। चाहे वह चिकित्सीय आपात स्थिति हो, आय में अचानक कमी हो, या अनियोजित खर्च हों। इस प्रकार की चुनौतीपूर्ण समय में हमारे द्वारा निवेशित राशि हमें आवश्यक वित्तीय राहत प्रदान करती हैं। निवेश के माध्यम से हम अपने वित्तीय लक्ष्य भी आसानी से प्राप्त कर लेते हैं, चाहे वह सपनों का घर बनाना हो, जमीन खरीदनी हो, बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाना हो, विश्व भ्रमण की इच्छा हो या कुछ अतृप्त आकांक्षाएं हों। सभी लक्ष्य समय सीमा और अपेक्षित लागत के अनुरूप अनुकूलित समाधान प्रदान करती हैं। निवेश योजनाओं के उद्देश्य बहुआयामी हैं, जो निवेशकों की विविध वित्तीय आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करते हैं।

निवेश का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू है जोखिम और प्रतिफल। ये दोनों साथ-साथ चलते हैं। कम जोखिम का मतलब आम तौर पर कम प्रत्याशित प्रतिफल होता है, जबकि उच्च प्रतिफल के साथ आमतौर पर उच्च जोखिम भी जुड़ा होता है।

अब हम चर्चा करते हैं निवेश के क्षेत्रों की। यद्यपि निवेश का संसार बहुत विशाल है, पर हम यहां निवेश के सबसे सामान्य प्रकारों की संक्षिप्त बातें ही करेंगे। सबसे पहले हम कुछ पारंपारिक निवेशों की बातें करते हैं जो भारतीय जनमानस की लोकप्रिय निवेश धारणा को अभिव्यक्त करती हैं, उनमें से प्रमुख निम्नानुसार हैं :

बचत खाता (Saving Deposit)

भारतीय समाज के परिप्रेक्ष्य में बात की जाए तो भारत की अधिकांश नागरिक निवेश के इस विकल्प से भली भांति परिचित हैं। या कहा जाए कि यह निवेश योजना आम जनता की सबसे प्राथमिक योजना है जो निवेश का सबसे सरल रूप है। इसमें निवेश करने पर वस्तुतः कोई जोखिम नहीं होता है चूँकि यह अधिकांशतः सरकार द्वारा समर्थित और वित्तपोषित होती है। इस प्रकार के निवेश में ब्याज की दरें अपेक्षाकृत कम होती हैं परंतु इनमें तरलता अधिक होती है अर्थात निवेशित राशि को आवश्यकता होने पर कभी भी आहरित किया जा सकता है। यह आपातकालीन जरूरतों को पूरा करने के लिए धन रखने का एक सुरक्षित विकल्प है जो आवश्यकता पड़ने पर तुरंत आपको प्राप्त हो जाता है।

सावधि जमा (Fixed Deposit)

सावधि जमा बैंकों और गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थानों द्वारा संचालित निवेश योजना है जिसमें निवेश राशि की एकमुश्त रकम को एक निर्धारित कालावधि के लिए निवेश किया जाता है जिसपर वित्तीय संस्थान एक निश्चित ब्याज दर से निवेशक को समयावधि पूरा होने पर मूलधन सहित रकम वापस करते हैं। इसमें निवेश की अवधि अलग-अलग वित्तीय प्रबंधनों में अलग-अलग निर्धारित होती है जो 1 वर्ष से लेकर 5 वर्ष तक या उससे अधिक अवधि तक लिए भी हो सकती है। इस प्रकार के निवेश सरकार की नीतियों या बाज़ार के उतार-चढ़ाव से बहुत अधिक प्रभावित नहीं होते और निवेश के समय निर्धारित रिटर्न राशि की गारंटी प्रदान करते हैं। यह निवेश योजना भी आम नागरिकों के बीच अत्यंत लोकप्रिय है। बचत खाता निवेश योजना की तुलना में सावधि जमा में की ब्याज दरें तुलनात्मक रूप से अधिक होती हैं। आवश्यकता होने पर सावधि जमा को बीच में ही भंग किया जा सकता है।

आवर्ती जमा (Recurring Deposit)

सावधि जमा की तरह ही आवर्ती जमा (आरडी) योजना भी भारत के आम नागरिकों के बीच एक लोकप्रिय निवेश योजना है। इस प्रकार के निवेश योजना में निवेशक एक निश्चित राशि मासिक आधार पर जमा करता है जो निर्धारित अवधि पूरा होने पर परिपक्वता (Maturity) की एकमुश्त राशि (मूलधन एवं

संचित ब्याज) के साथ वापस हो जाती है। यह योजना भी अधिकांशत: बैंकिंग संस्थानों द्वारा पोषित होते हैं। इसकी ब्याज दर भी सावधि जमा योजना के लगभग समान होती है। यद्यपि इसमें रकम का निवेश एक निश्चित अवधि के लिए किया जाता है तथापि अत्यंत गंभीर वित्तीय आवश्यकता होने पर इसे बंद करते हुए रकम आहरित किया जा सकता है। इस प्रकार के निवेश भी बाजार जोखिमों से परे होते हैं।

भविष्य निधि योजना (PF) : भविष्य निधि योजना सरकार द्वारा प्रायोजित निवेश विकल्प है जिसे नियोजकों द्वारा कर्मचारियों के भविष्य के हितों को ध्यान में रखकर लागू किया जाता है। कहीं-कहीं इसे कर्मचारी भविष्य निधि के नाम से भी जाना जाता है। इस निवेश में कर्मचारी के वेतन का कुछ नियत अंश नियमित तौर पर जमा किया जाता है। कर्मचारी भविष्य निधि योजना के अंतर्गत आनेवाले कर्मचारियों के खाते में कर्मचारी और नियोक्ता दोनों के द्वारा एक निर्धारित अंशदान जमा किया जाता है। इस योजना के अंतर्गत निवेशित राशि और अर्जित ब्याज की रकम करमुक्त होती है। निधि की आकस्मिक आवश्यकता होने पर लॉक अवधि के बाद इस निवेश योजना से रकम की निकासी की जा सकती है। इसका प्रबंधन सरकार द्वारा नियुक्त ट्रस्ट द्वारा किया जाता है। इस योजना में जमा राशि के लिए सरकार प्रत्येक वर्ष ब्याज की दर तय करती है जो आम तौर पर 8 प्रतिशत से ऊपर ही रहती है और यह चक्रवृद्धि ब्याज की दर से बढ़ती है तथा सेवानिवृत्ति के समय एकमुश्त प्रतिफल प्रदन करती है। सामान्य भविष्य निधि योजना में निर्धारित अंशदान के अतिरिक्त नियोक्ता स्वेच्छा से अधिक रकम भी जमा कर सकता है।

सार्वजनिक भविष्य निधि (PPF)

सार्वजनिक भविष्य निधि योजना सामान्य भविष्य निधि योजना का ही सार्वजनिक रूप है जो कि सरकार द्वारा समर्थित दीर्घकालिक बचत योजना है। सभी भारतीय नागरिकों को भविष्य निधि की सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से सरकार द्वारा इसे बैंकों के माध्यम से लागू किया गया है। पब्लिक प्रोविडेंट फंड (PPF) कम जोखिम वाला एक सुरक्षित निवेश विकल्प है जो प्रति वर्ष लगभग 7.1% के स्थिर ब्याज दर से प्रतिफल प्रदान करती है। PPF में निवेशित राशि पर कर कटौती का दावा किया जा सकता है।

पीपीएफ के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण जानकारी निम्नानुसार है :

ब्याज दर	7.1% प्रति वर्ष (सरकार द्वारा प्रतिवर्ष घोषित)
न्यूनतम निवेश राशि	500 रुपये (वर्ष के दौरान)
अधिकतम निवेश राशि	1.5 लाख रुपये प्रति वर्ष (एकमुश्त या एक वर्ष के दौरान अधिकतम 12 किश्तों में)
अवधि	15 वर्ष (परिपक्वता के बाद अंशदान के साथ या खाता बंद करके अगले 5 वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है)
जोखिम कारक	सुरक्षित निवेश, गारंटीकृत, कर मुक्त रिटर्न
कर लाभ	धारा 80सी के तहत 1.5 लाख रुपये तक
ऋण सुविधा	3 वर्ष से लेकर 6 वर्ष तक की अवधि में, अधिकतम ऋण - उपलब्ध शेष राशि का 25 प्रतिशत, ब्याज दर - 1% (36 महीने के लिए), उसके बाद 6%
निकासी	आंशिक निकासी - 6 वर्ष से, पूर्ण निकासी - 15 वर्ष

म्युचुअल फंड (MF)

म्युचुअल फंड निवेश की एक नवीनतम अवधारणा है जिसके तहत कई निवेशकों का पैसा एक साथ मिलाकर विभिन्न प्रतिभूतियों जैसे कि स्टॉक, बॉन्ड, गोल्ड, वस्तु जैसे अन्य निवेशों में निवेश किया जाता है। इसका प्रबंधन पेशेवर प्रबंधकों द्वारा किया जाता है जो निवेश निर्णय लेते हैं और पोर्टफोलियो का प्रबंधन करते हैं। इसमें निवेश करने वाले सभी निवेशकों को फंड के प्रदर्शन के आधार पर लाभ या हानि प्राप्त होती है। इसमें निवेश के लिए किसी बैंक, ब्रोकर, या म्यूचुअल फंड कंपनी के मध्यस्थता की आवश्यकता होती है। इसमें एकमुश्त अथवा नियमित रूप से एसआईपी (सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान) के माध्यम से भी निवेश किया जा सकता है। चूँकि म्युचुअल फंड निवेश में जोखिम अत्यंत उच्च स्तर की होती है और यह काफी कुछ शेयर बाजार के उतार-चढ़ाव पर निर्भर करता है अत: निम्न एवं मध्यम आय वर्ग के लोगों के बीच इसकी लोकप्रियता अपेक्षाकृत काफी कम है।

स्टॉक (शेयर मार्केट) निवेश : स्टॉक मार्केट को शेयर मार्केट या इक्विटी मार्केट भी कहा जाता है। यह एक ऐसा मंच है जहाँ निजी व सार्वजनिक उपक्रमों या कंपनियों के शेयर खरीदे और बेचे जाते हैं। यहां निवेशक कंपनियों के शेयर खरीदकर कंपनी में आंशिक हिस्सेदारी प्राप्त कर सकते हैं। शेयरधारक स्टॉक की कीमत में वृद्धि और लाभांश दोनों से लाभ उठा सकते हैं। यह भी एक उच्च जोखिम वाला निवेश होता है जहां पूंजी के डूबने अथवा उच्च आर्थिक रिटर्न की संभावना एक समान होती है। निवेश का यह विकल्प भी आम लोगों के बीच लोकप्रिय नहीं है, चूंकि स्टॉक की चाल को समझ पाना दुष्कर होता है और आमतौर पर यह आम लोगों की समझ से परे होता है।

सरकारी प्रतिभूतियां : सरकारी बॉन्ड (Government Bonds) सरकार द्वारा धन जुटाने के प्रयास में जारी किया जाता है। यह एक प्रकार का ऋण होता है जिसमें निवेशक सरकार को एक निश्चित ब्याज दर पर पैसे उधार देते हैं। सरकारी प्रतिभूतियों से प्राप्त धनराशि का उपयोग सरकार द्वारा विभिन्न परियोजनाओं या जनसुविधाओं के विकास के लिए किया जाता है। यद्यपि ये प्रतिभूतियां सरकार समर्थित व सुरक्षित होती हैं परंतु पर्याप्त जानकारी या प्रचार-प्रसार के अभाव में ये जनलोकप्रिय नहीं हैं।

राष्ट्रीय पेंशन योजना (एनपीएस)

एनपीएस एक सरकार समर्थित पेंशन योजना है जो सेवानिवृत्ति कोष जमा करती है। यह भारत के सभी नागरिकों को निवेश के बदले पेंशन की गारंटी प्रदान करती है।

राष्ट्रीय बचत प्रमाणपत्र (एनएससी)

राष्ट्रीय बचत प्रमाणपत्र (National Saving Certificate या NSC) भारत सरकार द्वारा संचालित एक निवेश योजना है और यह भारतीय डाकघरों के माध्यम से संचालित होता है। इसकी अवधि 5 साल की होती है। एक निश्चित ब्याजदर के साथ इसमें 80C के तहत कर लाभ की भी सुविधा मिलती है। व्यापक प्रचार के अभाव में यह योजना भी अपेक्षित स्तर तक लोकप्रिय नहीं है।

बीमा पॉलिसियाँ

बीमा पॉलिसियां भी भारतीय आम नागरिकों के बीच खासे लोकप्रिय हैं, पर कुछ भ्रांतियां भी हैं। बीमा पॉलिसियां मूलत: निवेश नहीं हैं जो निवेश की अन्य विकल्पों की तुलना में कम प्रतिफल देते हैं। ये मुख्यत: सुरक्षा कवर देती हैं जो किसी प्रकार की अनहोनी की स्थिति में पूर्ण बीमा राशि का भुगतान कर निवेशक को राहत पहुँचाती हैं। इसमें अधिक प्रतिफल की अपेक्षा से निवेश नहीं किया जा सकता।

संपत्ति में निवेश (रियल एस्टेट) : आधुनिकीकरण और

शहरीकरण के बढ़ते प्रभाव ने रियल एस्टेट कारोबार को नई ऊँचाईयां प्रदान की है। पूर्व की तुलना में आम नागरिकों का भी अब इस ओर रूझान तैयार हुआ है। यह निवेश का एक ऐसा विकल्प है जहां निवेशक ज़मीन, इमारतों और प्राकृतिक संसाधनों की खरीद बिक्री, लीज, किराया आदि के रूप में निवेश करता है। यह विकल्प अल्प समय में दुगुणी-तिगुणी प्रतिफल देने की क्षमता रखता है, विशेषकर शहरी क्षेत्रों में प्रोपर्टी की कीमत में काफी कम समय में काफी अधिक उछाल देखा जाता है। परंतु इस क्षेत्र में असामाजिक तत्वों का अधिक दबदबा होने के कारण निवेश में जोखिम बना रहता है जिससे निवेशकों में असुरक्षा की भावना होती है।

वस्तुएँ (goods) : इसमें निवेशक सोना, चांदी, हीरा या ज्वेलरी जैसे अन्य कीमती धातुओं पर निवेश करते हैं जिसे मूल्य में बढ़ोतरी होने पर बेचकर मुनाफा कमाया जाता है। चूँकि ये वस्तुएं अत्यंत कीमती होते हैं अत: आम निवेशकों के जद में नहीं होते।

आज के युग में आर्थिक योजनाएं और बजट बनाना अति आवश्यक है क्योंकि एक चिंतनशील प्राणी के रूप में मनुष्य भविष्य के अप्रत्याशित परिस्थितियों से निपटने के लिए आर्थिक रूप से आश्वस्त होना चाहता है और इस कवायद में वह अपने आर्थिक स्रोत से प्राप्त अतिरिक्त राशि को बढ़ाने के लिए निवेश करने हेतु अभिप्रेरित होता है। हलांकि आज के समय में निवेश के कई विकल्प मौजूद हैं तो एक निवेशक के रूप में हमें अपनी आमदनी के निवेश योग्य राशि को सोच-समझकर निवेश करना चाहिए ताकि यह सुरक्षित और अच्छा प्रतिफल दे सके।

राजेश एक्का
वरिष्ठ अनुवादक

बदलाव

बदलाव जरूरी है,
स्वयं को बदलो
समय को बदलो
या तो,
समय के साथ चलो।
टिकता वही है जो समय के साथ चलता है,
इसलिए,
बदलाव जरूरी है।

जो कहते थे,
हम नहीं बदलेंगे,
समय ने ऐसा बदला,
फिर रहे नहीं कहीं के
इसलिए,
बदलाव जरूरी है।

बदलाव होता है,
धीरे-धीरे,
उसी के साथ चल
माना कि,
बदल नहीं सकते खुद को,
एकाएक,
तो चल उसी के साथ,
इसलिए,
बदलाव जरूरी है।

देखा है कितनों को अकड़ते हुए,
अकड़ निकलते देर नहीं लगती।
जहां डटना है, वहीं डटो
जहां झुकना है, वहीं झुको
शेष रहता है वही,
जीतता है वही जो समय के साथ चलता है,
इसलिए,
बदलाव जरूरी है।

शंकर कच्छप,
आरक्षी/रे.सु.ब/कालीघाट पोस्ट

ऑपरेशन सिंदूर: एक संकल्प, एक संदेश, एक सावधानी-

जब सीमा के उस पार से बारूद की गंध आए, तो फूल नहीं, फौलाद भेजा जाता है।

भारत की वीरभूमि ने एक बार फिर दिखा दिया कि वह न केवल सहनशील है बल्कि समय आने पर संकल्पित और सशक्त भी है। ऑपरेशन सिंदूर कोई आम सैन्य कार्रवाई नहीं थी। यह एक क्रांति का संकेत, एक नए भारत की हुंकार और आतंक के खिलाफ उठी तलवार थी।

सिंदूर क्यों?

इस ऑपरेशन का नाम ही अपने आप में प्रतीक है। सिंदूर भारतीय संस्कृति में सतित्व, सम्मान और सुरक्षा का प्रतीक है। जब इसी सिंदूर को आतंक के धब्बे से ललकारा गया, तो भारत की शक्ति ने उसे धो डालने का निश्चय कर लिया। यह एक ऐसा नाम है जो दर्शाता है कि यह लड़ाई सिर्फ सीमा पर नहीं, हमारे संस्कारों और स्वाभिमान की रक्षा की भी है।

विश्व को क्या संदेश गया?

ऑपरेशन सिंदूर ने दुनिया को स्पष्ट बता दिया कि भारत अब कूटनीति के पर्दे में छिपने वाला देश नहीं रहा।

यह एक रणनीतिक साहस था जो संयुक्त राष्ट्र, अमेरिका, यूरोपीय देशों को यह समझा गया कि भारत आतंकवाद को सिर्फ बोलकर नहीं, करके खत्म करता है।

यह उन देशों के लिए भी चेतावनी थी जो आतंक को प्रॉक्सी वार का हथियार बनाते हैं-अब भारत चुप नहीं बैठेगा।

भारत पर क्या प्रभाव पड़ा?

1. राष्ट्रीय चेतना जागी - नागरिकों में गर्व और सुरक्षा का भाव गहराया।

2. आत्मबल बढ़ा - यह संदेश गया कि देश का हर कोना, हर व्यक्ति, सैनिकों के साथ खड़ा है।

3. राजनीतिक दृढ़ता - यह निर्णय दर्शाता है कि भारत अब युद्ध और शांति के बीच संतुलन साधने में कुशल है।

पाकिस्तान के लिए एक आईना

ऑपरेशन सिंदूर ने पाकिस्तान को उसका असली चेहरा दिखाया:

आतंक को बढ़ावा देने की उसकी नीति अब खुद उसी के लिए संकट बनेगी।

अब उसे सोचना होगा कि आतंक की खेती अंत में विनाश का फल ही देती है।

भारत ने यह दिखा दिया कि अब वह सिर्फ प्रतिक्रिया नहीं देगा, पहलकदमी भी करेगा।

सीज़फायर: संधि या रणनीति?

भारत ने सीज़फायर मानकर यह नहीं दिखाया कि वह कमजोर है बल्कि यह साबित किया कि शांति की पहल पहले करेगा लेकिन अगर कोई उसे चुनौती देगा तो जवाब भी उसी भाषा में देगा।

यह एक राजनयिक शतरंजी चाल है-शांति की पेशकश के पीछे रणनीति की ताकत छिपी है।

क्या आतंकवाद रुकेगा?

पूर्णतः शायद नहीं, पर अब डर आतंकियों के दिल में जाएगा।

हर बार घुसपैठ से पहले उन्हें 10 बार सोचना होगा।

हर बार हमला करने से पहले उन्हें याद आएगा सिंदूर की आंच, जो राख कर देगी।

समापन विचार:

ऑपरेशन सिंदूर कोई अंत नहीं, एक शुरुआत है-उस भारत की जो अब अपनी सीमाओं को सिर्फ खून से नहीं साहस और सर्जना से भी सींचता है।

यह उस भारत की गूंज है जो जब शांति चाहता है, तो कमल खिलाता है,

और जब युद्ध थोप दिया जाए-तो वज्र की तरह प्रहार करता है।

ये नया भारत है-चेतावनी नहीं देता, सीधा हिसाब करता है।

लीलावती सिंह,
कार्यालय अधीक्षक,
सिगनल एवं दूरसंचार

प्रेत भोजन

मृत्यु एक रहस्य है। मृत्यु के बाद व्यक्ति कहाँ चला जाता है, कैसे चला जाता है! ऐसे बहुत सारे प्रश्न मन में जन्म लेते रहते हैं। क्या मृत्यु के बाद भी कोई जीवन होता है? कोई लोक होता है? क्या पुण्य फल के कारण व्यक्ति स्वर्ग में सुख भोग करता है और नरक में पाप के करण दंड भोगता है?

शास्त्रों में कहा गया है कि आत्मा अमर है, बस यह एक शरीर को छोड़ दूसरे शरीर में प्रवेश करता है। मृत्यु के बाद शरीर पंचभूत में विलीन हो जाता है, फिर किसी रहस्यात्मक प्रक्रिया के माध्यम से मृत व्यक्ति पुराने सभी बंधनों, रिश्तों को भूलकर

एक नए शरीर में प्रवेश करता है जिसे कायाप्रवेश कहते हैं। ये सभी बातें उच्च कोटी के विद्वानों के लिए है। हम जो निपट कामनामय जीव हैं, क्या वे भी ऐसा ही सोचते हैं। नहीं, ऐसा शायद नहीं सोचते हैं। हम सोचते हैं मृत व्यक्ति को ईश्वर ने ऊपर बुला लिया है। उसका समय पूरा हो चुका था। मरने के बाद वह ऊपर से हमें देख रहा है या उसकी आत्मा हमारे आसपास भटक रही है। श्मशान से लेकर उसके श्राद्ध होने तक उसकी आत्मा को मुक्ति नहीं मिलेगी। मुक्ति मिलते ही चित्रगुप्त के लेखा-जोखा के आधार पर यमराज उनका विचार करेंगे और फिर पाप-पुण्य के हिसाब के आधार पर उन्हें स्वर्ग या नरक की प्राप्ति होगी।

कहते हैं मृत्यु के बाद जो पिंड दान होता है, उस प्रक्रिया के माध्यम से ही हम एक शरीर का निर्माण करते हैं जिसमें अंग-प्रत्यंग का समावेश होता है। श्मशान में सबसे पहले एक पिंड दान दिया जाता है, जिससे सिर का निर्माण होता है। फिर घाट श्राद्ध के दिन 10 पिंड का दान दिया जाता है, जिससे आँख, कान, नाक, हाथ, पैर, शिराएं, अस्थिमज्ज़ा आदि का निर्माण होता है। पिण्डदानं कृतं यत् तत् सूक्ष्मं शरीरं करोति अर्थात जो पिंडदान किया जाता है, वह एक सूक्ष्म शरीर बनाता है। एतद् शरीरं यमलोकं गच्छति आत्मा अर्थात यह सूक्ष्म शरीर आत्मा को यमलोक की यात्रा करने में मदद करता है। ततः पुनर्जन्म मार्गं गच्छति आत्मा अर्थात इसके बाद, आत्मा पुनर्जन्म की प्रक्रिया में प्रवेश करती है।

मैं यदि अपनी बात कहूँ तो मुझे ये क्रिया अद्भुत प्रतीत होती है। क्या मृत्यु के बाद भी कोई जीवन होता है, कैसी वायु निरालंब व्यक्ति को आश्रय प्रदान करती है, स्वर्ग कैसा होता है? नरक कैसा होता है? क्या मरने के बाद सब भूत हो जाते है? क्या आत्मा भटकती रहती है? बहुत से प्रश्न हैं, पर कोई ठोस जवाब नहीं है। कहते हैं रवीन्द्रनाथ ने जब प्लैंचेट करके अपनी भाभी कादंबरी देवी को बुलाया था तब उन्होंने उनसे प्रश्न किया था कि 'वहाँ तुमलोगों का जीवन कैसा है?' कहते हैं उनकी मृत भाभी ने उत्तर में कहा था कि- 'जो राज मैंने मरके जाना है उसे तुम बिना मरके जानना चाहते हो?'

कभी-कभी विज्ञान कुछ प्रश्नों के सामने बेबस हो जाता है। ऐसा लगता है बुद्धि और विज्ञान के परे भी कुछ चीजें घटित होती हैं जिससे हम आज भी अनभिज्ञ हैं। जहां कोई तर्क नहीं चलता, कोई फार्मूला सेट नहीं होता।

मैंने आजतक आँखों के सामने विकृत मृत्यु को नहीं देखा है। मैंने मृत्यु को नजदीक से भी नहीं देखा है। मेरे पिताजी की

मौत भी अस्पताल में हुई थी। मृत्युकाल में मैं उनके समीप नहीं था। इसलिए मृत्यु के समय के भाव कैसे होते हैं। अचानक कब, कहाँ किसकी मौत हो जाती है, कोई नहीं जानता। मैंने सुना है सोते-सोते गुजर गए, बात करते करते हार्ट अटैक हुआ और चल बसे आदि। आप कह सकते हैं जो आया है, उसे जाना ही है, राजा हो या रंक। कौन यहाँ अमर होकर आया है? ये सृष्टि का नियम है। ये जीवन एक पुलिया है, सबको इसपार से उसपार जाना है। जब आत्मा निकल गई तो सिर्फ पीछे शरीर रह गया। उसे बस दाह करके या मिट्टी में गाड़कर उसके जैविक शरीर को नष्ट कर देना है। इसमें कोई रहस्य है ही नहीं। मुझे रवींद्रनाथ ठाकुर की वो पंक्ति याद आ जाती है 'मरण रे तुहूँ मम श्याम समान।'

लोगों की बात नहीं जनता। मैं अपनी एक आपबीती यहाँ साझा करना चाहूँगा। पिछले वर्ष की बात है मैं अपने पीसी अर्थात अपने पिताजी के बहन के घर बनगांव (पश्चिम बंगाल) घूमने गया था। पीसी के दो बेटे हैं। उनके छोटे बेटे के साथ मेरी दोस्ती बहुत गहरी है। वे मुझसे उम्र में भी बड़े हैं। वे वहाँ छोटे पंडित के नाम से जाने जाते हैं। पूजा और कर्मकांड करवाना ही उनका पेशा है। मैं जब भी उनसे मिलता हूँ, अधिकतर समय हम पूजा के नियम आदि पर चर्चा करते रहते हैं। मैं जिस दिन वहाँ पहुंचा, मेरे भाईसाहब नजदीक में ही किसी के घर श्राद्ध करवाने जा रहे थे। मैं भी उनके साथ हो लिया। सोचा, उनके साथ समय बीत जाएगा और श्राद्ध का नियम भी देख पाऊँगा। घर में पीसी के साथ रहकर क्या होगा। तो उनके साथ मैं भी चला गया। जिसके घर गया उनके घर के मालिक की मौत अचानक हार्ट अटैक से हो गई थी। उम्र 60 के आसपास होगी। एक ही बेटा श्राद्ध का काम कर रहा था। उनका अर्थात मृत व्यक्ति को कोई और संतान न था। मेरे भैया ने श्राद्ध का काम शुरू कर दिया। मैं भी भैया के साथ ही उनके बगल में बैठ गया। मुझे एक बात का बहुत आश्चर्य हुआ कि जब से बेटा श्राद्ध के

कार्य पर बैठा था, बार बार बोल रहा था - 'पंडितजी जल्दी कीजिएगा। 12 बजे तक कार्यक्रम समाप्त कर दीजिएगा, मुझे पिताजी को भोजन देना है। 12.00 बजे से 12.30 बजे के बीच ही पिताजी खाना खाते थे।' पंडितजी अर्थात मेरे भैया ने 11.59 में ही सब नियम अर्थात पिंड दान, पिंड पूजा और पिंड विसर्जन समाप्त कर दिया। बेटा अब मृतक भोज के लिए घर में जो-जो बना था उसे एक पत्तल में सजाकर घर के पीछे एक सुनसान जगह पर रख दिया और धूप-दीप जलाकर 'बाबा एई बार खे नाओ।' (पापा अब खा लीजिए) कहकर लौट आया। यहाँ कहना उचित होगा कि बंगाली घर परिवार में नियमानुसार श्राद्ध या नियमभंग के दिन मृतक को भोजन देने का रिवाज प्रचलित है।

मेरे मन में आया, क्या सच में मृत व्यक्ति भोजन ग्रहण कर सकता है? जब शरीर ही नहीं है तो भोजन कैसे कोई कर लेगा? सुना है और मैंने देखा भी है इस भोजन देने के नियम को। उस समय घड़ी में 13.30 बजे थे। उनका बेटा मुझे और मेरे भैया को उस स्थान पर ले गया जहां भोजन दिया गया था। मेरी आँखें तो फटी की फटी रह गई। पत्तल में कुछ नहीं था। मछली के कांटे को बिन कर पत्तल के किनारे पर रखा गया था। पत्तल पर स्पष्ट

उंगली के निशान तक थे। पत्तल पर पानी के गिलास को उलट कर रखा गया था। बेटे ने धीरे से कहा 'बाबा एईभाबे खेतेन' (पिताजी ऐसे ही खाना खाते थे।) मैं क्या कहूँ, सोच कर चुप था। उसके बाद हम घर चले आए, पर प्रश्न मेरे मन में चल रहा था, ये कैसे संभव है? कोई जीव-जन्तु इतने साफ से तो भोजन कर नहीं सकता है! तो क्या सच में उसके पिताजी ने खाना खाया था?

रवींद्रनाथ ने अपने अंतिम दिनों में शायद इसलिए लिखा था-

'तोमार सृष्टिर पथ रेखेछो आकीर्ण कोरी
विचित्र छलोनाजाले,
हे छलोनामोई,
मिथ्या विश्वास एर फांद पेतेछो निपुण हाथे,
सरोल जीबोने।'

मैंने पहले ही कहा था, कुछ प्रश्नों के उत्तर अधूरे और अनसुलझे रहते हैं। जन्म और मृत्यु का रहस्य शायद ईश्वर के पास ही सुरक्षित है। इसे आजतक कोई भेद या जान नहीं सका।

शांत्वनु नाथ
कनिष्ठ अनुवादक
मेट्रो रेलवे/कोलकाता

नौकरी

आप मेरी रक्षा करेंगे,
लेकिन मेरी आजादी छीन लेंगे।
मैं घड़ी पर अटका रहूँगा,
केवल आर्थिक समृद्धि के भ्रम में।
और मैं तुम्हें क्या दोष दूँगा,
मैं असहाय होकर तुमसे लिपट गया हूँ।
मैंने आपको उम्र के बोझ तले दबे माता-पिता को,
परिवार की देखभाल के लिए
काम से छुट्टी देने के लिए चुना है।
सबसे व्यस्त समय आपके आसपास है,
और जो प्रिय है वो ही अवसर में है।
सर्दी-गर्मी-मानसून की अनदेखी
मुझे आपके दरबार में उपस्थित होना है।
मैं काम के दबाव में फंस गया था,
ऐसे हालात का गुलाम बन गया,
कई बार सोचा तुम्हें छोड़ दूँ,
लेकिन अगर बेरोजगारी फिर से हावी हो जाए,
मैंने दांत पीसकर इसे सहन किया,
जिस कमी के लिए आपके पास आई
निवृत्ति के बाद वह कमी नहीं रहेगी।
आज परिवार में सभी लोग खुश हैं,
लेकिन केवल एक चीज की कमी है,
दबी हुई इच्छाएं आज अधूरी हैं,
यह पूरा नहीं हो सकता,
यदि गरीबी और गुलामी से भी बचा जाए,
तो भी मन संतुष्ट नहीं होगा।

तन्मय पाल
सहायक परिचालन, बिजली/परियोजना

मेरा देश महान

मेरा देश महान' केवल एक वाक्य नहीं है बल्कि यह एक ऐसी भावना है जो हर भारतीय के दिल की गहराइयों में बसी होती है। भारत केवल एक भूखंड नहीं बल्कि एक सभ्यता, संस्कृति और आत्मा का नाम है। भारत के इतिहास, परंपराओं, ज्ञान, वीरता और सांस्कृतिक धरोहर ने इस देश को विश्व पटल पर एक विशेष स्थान दिलाया है। भारत को 'सोने की चिड़िया' कहा जाता है और आज भी इसकी आत्मा उतनी ही गौरवशाली है।

भारत की ऐतिहासिक महानता

भारत का इतिहास 5000 वर्षों से भी अधिक पुराना है। सिंधु घाटी सभ्यता, मोहनजोदड़ो और हड़प्पा जैसे शहर उस युग में भी नगर नियोजन और स्वच्छता में अद्वितीय थे। वैदिक काल में ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद जैसे महान ग्रंथों की रचना हुई। महान सम्राट अशोक, चंद्रगुप्त मौर्य, समुद्रगुप्त विक्रमादित्य और अकबर जैसे शासकों ने भारत को समृद्ध, न्यायप्रिय और शक्तिशाली बनाया। विश्व की शून्य, दशमलव, त्रिकोणमिति, आयुर्वेद, योग और दर्शन का ज्ञान देने वाला भारत ही है।

संस्कृति और परंपराओं की विविधता

भारत की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सांस्कृतिक विविधता है। यहां 22 से अधिक मान्यता प्राप्त भाषाएं और हजारों बोलियां बोली जाती हैं। हर राज्य की अपनी अलग-अलग संस्कृति, पोशाक, भोजन, संगीत और नृत्य है - जैसे राजस्थान की कठपुतली, पंजाब का भांगड़ा, तमिलनाडु का भरतनाट्यम और असम का बिहू।

यह विविधता भारत को आद्वितीय बनाती है लेकिन इसके बावजूद हर भारतीय की पहचान भारतीयता से जुड़ी होती है। 'विविधता में एकता' भारत की आत्मा है।

धार्मिक सहिष्णुता और आध्यात्मिक गौरव : भारत धर्मों की भूमि है। यहां हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म और सिख धर्म की उत्पत्ति हुई। मुसलमान, ईसाई, पारसी यहूदी आदि धर्म के अनुयायी भी यहां शांतिपूर्वक रहते हैं। यह धार्मिक सहिष्णुता ही भारत की आध्यात्मिक महानता को दर्शाती है। भारत ने दुनिया को ध्यान, योग और आत्म साक्षात्कार की अवधारणाएं दी हैं। ऋषि मुनियों की परंपरा आज भी जीवित है। बनारस, अमरनाथ, वैष्णो देवी, बोधगया, पुष्कर, अजमेर शरीफ और मंदिर जैसे तीर्थस्थल भारत की आध्यात्मिक धरोहर को दर्शाते हैं।

स्वतंत्रता संग्राम - बलिदानों की प्रेरणादायक गाथा:

भारत का स्वतंत्रता संग्राम दुनिया के सबसे बड़े और शांतिपूर्ण आंदोलनों में से एक था। महात्मा गांधी के नेतृत्व में अहिंसा और सत्याग्रह के मार्ग पर चलकर भारत ने विश्व को दिखाया कि शांति से भी क्रांति लाई जा सकती है। भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, सुभाष चंद्र बोस, राम प्रसाद बिस्मिल और हजारों स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने जीवन को राष्ट्र के लिए

समर्पित कर दिया। यह वीर गाथाएं आज भी युवाओं को प्रेरणा देती हैं।

आधुनिक भारत की वैज्ञानिक और तकनीकी उपलब्धियां

आज का भारत विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना चुका है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, इसरो ने चंद्रयान, मंगलयान और गगनयान जैसी परियोजना के माध्यम से भारत को अंतरिक्ष की दौड़ में अग्रणी बनाया है। डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम जैसे वैज्ञानिकों ने मिसाइल विकास कार्यक्रम को एक नई दिशा दी। भारत ने न केवल आईटी और डिजिटल प्रौद्योगिकी में बल्कि औषधि निर्माण जैव प्रौद्योगिकी और रक्षा क्षेत्र में भी जबरदस्त प्रगति की है।

भारतीय लोकतंत्र - जनता का शासन :

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। यहां हर नागरिक को मत देने का अधिकार है। संविधान भारत के प्रत्येक नागरिक को समानता स्वतंत्रता और न्याय की गारंटी देता है। यहां मीडिया स्वतंत्र है। न्यायपालिका निष्पक्ष और विधायिका को जनता का समर्थन प्राप्त है। भारत में पंचायत से लेकर संसद तक लोकतांत्रिक व्यवस्था है जो कि जनता को सरकार के निर्माण में भागीदारी का अधिकार प्रदान करती है।

भारतीय सेना और राष्ट्रीय सुरक्षा :

भारतीय सेना विश्व की सबसे शक्तिशाली सेवाओं में से एक है देश की रक्षा में हमारे वीर सैनिक सर्दी, गर्मी और तूफानों में भी सीमाओं पर तैनात रहते हैं। कारगिल युद्ध, सर्जिकल स्ट्राइक और पुलवामा हमले के जवाब में भारतीय सेना की वीरता और निष्ठा दुनिया ने देखी। सशस्त्र बलों की यह तत्परता ही है जो देश को सुरक्षित और शांत बनाए रखती है। भारतीय नौसेना, वायु सेना और थल सेना आधुनिक हथियारों और तकनीक से सुसज्जित है।

चुनौतियां और समाधान : हालांकि मेरा देश महान है, लेकिन यह भी सत्य है कि हमें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। गरीबी, शिक्षा, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और सामाजिक असमानता जैसी समस्याएं अभी भी हमारे सामने है। लेकिन हर समस्या का समाधान संभव है, यदि हम सभी नागरिक अपने कर्तव्यों को समझें और ईमानदारी से उनका पालन करें। स्वच्छता, शिक्षा, महिला सशक्तिकरण और पर्यावरण संरक्षण जैसे क्षेत्रों में जन भागीदारी से ही भारत को और महान बनाया जा सकता है। मेरा कर्तव्य एक सच्चे नागरिक के रूप में यदि हमें अपने देश को वास्तव में महान बनाना है तो केवल अधिकारियों की बात नहीं, कर्तव्यों का पालन भी जरूरी है। ईमानदारी, मेहनत सहनशीलता और दूसरों की मदद की भावना को अपनाकर हम समाज और देश दोनों को बेहतर बना सकते हैं। हर नागरिक, यदि देश के प्रति समर्पण की भावना से कम करें तो भारत विश्व का सबसे शक्तिशाली, सुखद और समृद्ध राष्ट्र बन सकता है।

निष्कर्ष: 'मेरा देश महान' कहना एक जिम्मेदारी है। यह केवल गर्व करने की बात नहीं बल्कि इसे बनाए रखने और ऊंचाइयों तक पहुंचाने का संकल्प भी है। भारत के इतिहास संस्कृति, विज्ञान, सैनिक बल और लोकतंत्र पर गर्व करना चाहिए लेकिन साथ ही हर नागरिक को इसके निर्माण में सक्रिय भूमिका भी निभानी चाहिए। भारत एक महान देश है क्योंकि इसके नागरिक महान हैं। अगर हम सब मिलकर देश की भलाई के लिए काम करें तो कोई कारण नहीं कि भारत फिर से विश्वगुरु न बने।

जय हिंद, जय भारत।

प्रियंका कनोजिया
पुत्री-शिवलाल कनोजिया
कार्यालय अधीक्षक

आत्मविश्वास

विश्वास मानव जीवन की ताकत है जो उसे लाखों परेशानियों, विपरीत परिस्थितियों, उलझनों में भी गतिशील और सुव्यवस्थित बनाए रखती है। विश्वास की डोर से बंधी हुई जीवन की नैया डगमगा नहीं सकती। अनेक उलझनें, समस्याएं, आंधियां, तूफान भी व्यक्ति को अपने ध्येय-पथ से विचलित नहीं कर सकते हैं जो अपने-आप में अटूट विश्वास लिए चल रहा हो। जीवन में प्रकाश देने वाले सभी दीपक बुझ जाएं किन्तु मनुष्य के अंदर में विश्वास की ज्योति जलती रहे तो वह घोर अंधकार में भी अपना पथ स्वयं ही ढूंढ़ लेगा। आत्म विश्वास की ज्योति के समक्ष सभी अंधकार अदृश्य हो जाते हैं। संसार में जितने महान कार्य हुए हैं, वे सभी विश्वास की ही कृति हैं। महात्मा गांधी के प्रबल विश्वास ने ही देश की आजादी का स्वप्न साकार किया। बाल गंगाधर तिलक जी ने कहा था स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे हम लेकर रहेंगे। उनका यह दृढ़ विश्वास कालान्तर में साकार हुआ। लिंकन ने अपनी डायरी में लिखा और साथ ही लोगों से कहा - 'मैंने अपने भगवान को यह वचन दिया है कि दासों की मुक्ति के कार्य को मैं अश्वय पूरा करूँगा' अनेक विरोधों के बावजूद भी लिंकन ने वह महान कार्य संपन्न किया। इसलिए अमेरिका में दास प्रथा के अंत का श्रेय लिंकन को ही जाता है। कोलंबस को विशाल सागर के पार किसी कूल का विश्वास था। उसने अपनी साहसिक यात्रा करके अन्तत: अमरीका को खोज कर ही ली।

विश्वास सफल जीवन का मूलमंत्र है। टॉललस्टाय ने लिखा है - विश्वास जीवन की शक्ति है शेक्सपीयर ने कहा था - विश्वास क्या नहीं कर सकता, विश्वास गगनचुम्बी पहाड़ों को लांघने की शक्ति और प्रेरणा देता है। विश्वास ही जीवन के उस मार्ग की खोज करता है जो हमें मंजिल तक पहुँचा सके। महात्मा गांधी ने कहा था - विश्वास हमारी जीवन नैया को तूफानी सागर में भी खेता है। विश्वास पर्वतों को हिला देता है। विश्वास सागर को लांघ सकता है। विश्वास कोई कोमल पुष्प नहीं जो साधारण वायु के झोंके से ही गिर जाए, वह हिमालय पर्वत की तरह अडिग है।

जहां विश्वास है वहां जीवन के समस्त अभाव, अभिशाप, दीनता, दरिद्रता, गरीबी, निष्प्रभाव हो जाते हैं। ये जीवन के विकास के क्रम में बाधक नहीं बनते। संसार के अधिकांश महापुरूषों का जीवन इसी तथ्य का प्रतिपादन करता है जिन्हें बढ़ाने के लिए तनिक भी सहारा नहीं था उन्होंने अपने आत्मबल के सहारे जीवन की महान सफलताएं अर्जित की। अनेक व्यक्ति असाधारण बन गए, अपने विश्वास के आधार पर। किसी भी क्षेत्र में सफलता अर्जित करने के लिए, आगे बढ़ने के लिए विश्वास का होना आवश्यक है। किसी भी ध्येय की पूर्ति के पीछे विश्वास की सत्ता नहीं होगी तो वह प्रारंभ काल में ही अस्त हो जाएगा। विश्वास के अभाव में मनुष्य का जीवन शुष्क, नीरस, निर्जीव-सा बन जाता है। जड़ता अपने जाल में जकड़ लेती है। विश्वास के अभाव में राजपथ पर भी मनुष्य एकदम आगे नहीं बढ़ सकता है। विश्वास कहीं अन्यत्र ढूंढी जाने वाली वस्तु या किसी की कृपा या वरदान नहीं है । यह हमारे अन्तर में ही विराजमान सनातन सत्य है। आत्म चेतना अजर-अक्षर,

सर्वशक्ति सम्पन्न, दिव्य स्वरूप ही हमारे विश्वास का आधार हो सकता है। मनुष्य अपने आप में अक्षय शक्ति और विधियों का स्वामी है। मनुष्य के अन्तर में शक्ति समृद्धि का अभाव होता है। इसका परिचय होने पर दृढ़ विश्वास अभ्युदय होता है।

विश्वास में बहुत ताकत होती है। यह आपको डगमगाने नहीं देता बल्कि एक उम्मीद देता है। चाहेआप परमेश्वर पर विश्वास ना करते हों या उस पर से आपका विश्वास उठ गया हो या आप उस पर अपना विश्वास और मज़बूत करना चाहते हों। भले ही आप जितने बार आप भी असफल हों पर आत्मविश्वास नहीं उठना चाहिए, एक दिन आप जरूर कामयाब होंगे।

बहुत से दोस्त काफी होशियार होने पर भी आगे नहीं बढ़ पाते इसका प्रमुख कारण है की उनके पास आत्मविश्वस की कमी है। समय, अनुभव और ज्ञान के आधार पर धीरे-धीरे आपका आत्मविश्वास विकसित होता जाता है।

आइए इससे जुड़ी एक कहानी सुनाते हैं। एक राजा था। उसके पास एक पुराना घोड़ा था और घोड़ा बहुत शक्तिशाली था। राजा हर लड़ाई उसी के कारण जीतता था। एक दिन घोड़ा बीमार हो गया और उठने में सक्षम नहीं था। चूंकि यह राजा का भाग्यशाली घोड़ा था और वह लड़ाई में घोड़े को ले जाना चाहते थे, अतः राजा को एक विचार आया और उसने अपने मंत्रियों से युद्ध का बिगुल बजाने के लिए कहा। घोड़े ने आवाज सुनी। खुद को साहस दिया और उठ खड़ा हुआ और लड़ाई के लिए तैयार हो गया। यह उसका आत्मविश्वास ही था जिसने उसे बीमार होने के बावजूद खड़ा कर दिया। आत्मविश्वास हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसलिए हमेशा खुद पर विश्वास होना चाहिए और प्रेरित होते रहना चाहिए।

मानसिंह मेलगन्डी

निजी सचिव-।।

जैसा करोगे वैसा भरोगे

एक गांव था। उसमें दो दोस्त रहते थे। नाम था, राम और श्याम। दोनों मेहनत मजदूरी कर अपना पेट पाल रहे थे। एक बार गांव में अकाल पड़ गया। गांव में खेती-बारी के अलावा रोजी रोटी कमाने का अन्य कोई साधन तो था नहीं, अतः दोनों दोस्त नजदीक के शहर चले गए। वहां उन्होंने 10 महीने तक काम किया और जब वर्षा ऋतु आई तो दोनों वापस अपने गांव लौट पड़े। चलते-चलते सुबह से शाम हो गई। रास्ते में राम बीमार पड़ गया। अंधेरा होते-होते दोनों एक गांव पहुंच गए। गांव में सड़क के किनारे एक घर था। उसके मालिक का नाम था दशरथ। वह अपने घर के बाहर चबूतरे पर बैठा था। दशरथ को बैठा देख राम और श्याम ने उनसे कहा - हम पड़ोस के गांव के रहने वाले हैं। शहर से गांव लौट रहे हैं। किंतु पैदल चलते-चलते थक गए हैं। हममें से एक आदमी बीमार भी है। यदि रात भर ठहरने के लिए आप अपने अहाते में थोड़ी सी जगह दें तो आपकी बड़ी कृपा होगी। सुबह उठकर हम चले जाएंगे। दशरथ बड़ा लालची था। बिना किराए लिए वह रात्रि विश्राम के लिए जगह देने को तैयार ही नहीं था। राम और श्याम भी किराया देना नहीं चाहते थे। बेबस होकर दोनों ने दशरथ के घर के सामने खड़े एक पेड़ के नीचे रात गुजार दी। रात में दशरथ के अहाते में लगे फूलों से आने वाली भीनी-भीनी खुशबू ने दोनों की थकावट दूर कर दी। सुबह नींद से जागने पर दोनों ने अपने को स्वस्थ एवं तरोताजा महसूस किया। दशरथ ने सुबह दोनों को देखा तो उनके चेहरे की रौनक देखकर वह चकित रह गया। उसने उनसे पूछा - 'रात में तुम दोनों में से एक बीमार था पर अब तो तुम दोनों भले-चंगे नजर आ रहे हो। बिना कोई दवा खाए रात में तुम ठीक कैसे हो गए?' 'आपके अहाते में लगे फूलों के जो पौधे हैं उनकी खुशबू ने मुझे चंगा कर दिया।' राम ने मुस्कराकर कहा - अच्छा ऐसी बात है! 'जी हां, ऐसा ही है।' 'तब दोनों मेरे साथ आईए।' 'कहां चलना है?' - दोनों ने पूछा।

- गांव के मुखिया के पास।

- मुखिया के पास!

- मगर क्यों?

- यह तो मैं वहीं बताऊंगा। ठीक है, चलिए। दोनों दशरथ के पीछे-पीछे चल पड़े। मुखिया के पास पहुंचकर तीनों ने उन्हें अभिवादन किया और वहीं बैठ गए। मुखिया ने दशरथ से पूछा - आज सुबह-सुबह कैसे आना हुआ? यह दोनों कौन हैं? अपने गांव के तो नहीं? हां, अपने गांव के नहीं, पड़ोस के गांव के हैं। रात में ये दोनों मेरे घर के सामने वाले पेड़ के नीचे सोये थे। इनमें से एक बीमार था। परंतु सुबह देखा तो वह स्वस्थ व भला-चंगा हो गया। भला! रात भर में बिना किसी दवा के यह चमत्कार कैसे संभव हुआ? फूलों की खुशबू से - दशरथ ने उत्तर दिया। फूलों की खुशबू से भला कैसे? - मुखिया ने पूछा। मेरे अहाते में फूलों के पौधे हैं। उनकी खुशबू ने इन्हें स्वस्थ कर दिया। क्या यह सच है? - आश्चर्य चकित हो मुखिया ने पूछा। जी हां, यह सच ही है - राम-श्याम ने कहा। यह तो बड़ी अच्छी बात है - मुखिया ने दशरथ के चेहरे पर नजर डालते हुए कहा। मुखिया जी, यह करामात मेरे अहाते के फूलों की खुशबू की है अतएव इसके इलाज की रकम मुझे दिलवाई जाए - दशरथ ने मुखिया से कहा। हां, बात तो तुम सही कहते हो, अच्छा! तो कितनी होती है इलाज की रकम? - मुखिया ने दशरथ से सवाल किया। सिर्फ रु.100 - दशरथ ने कहा। यह तो बहुत से ज्यादा है। न तो यह ज्यादा है और न कम, एकदम सही है - दशरथ ने प्रत्युत्तर देते हुए कहा। तब मुखिया ने राम और श्याम से कहा - आप इसके अहाते के फूलों की खुशबू से स्वस्थ हुए हैं। उनकी कीमत जो रु.100 बनती है उनको दे दीजिए, नहीं तो आपको सजा दी जाएगी। मजबूरन उन दोनों को रु.100 दशरथ को देना पड़ा। उन दोनों ने दशरथ को सबक सिखाने का निश्चय किया और उस रात भी उसी पेड़ के नीचे ठहर गए। अगले दिन प्रात: काल राम और श्याम मुखिया के पास गए और उनसे कहा रात को हम उसी पेड़ के नीचे सोए थे। तो मैं क्या करूं? - मुखिया ने दोनों की ओर सवालिया नजरों से देखते हुए कहा। हमारे कहने का मतलब यह है कि कल इलाज के तौर पर जिस व्यक्ति को आपने हमसे रु.100 दिलवाए थे। रात में जब हम उनके घर के सामने वाले पेड़ के नीचे सोए थे तो उसके घर से निकल रहे धुएं से हम दोनों बीमार हो गए हैं। अब हमें डॉक्टर से इलाज कराना होगा। लिहाजा हमें डॉक्टर की फीस व दवा का खर्चा का हर्जाना दिलाया जाए। आप उसके घर के धुएं से बीमार हुए हैं तो आपको हर्जाना जरूर मिलेगा - मुखिया ने कहा और अपना एक आदमी भेज कर दशरथ को बुलवा भेजा। मुखिया ने दशरथ को वस्तु स्थिति की जानकारी देते हुए उससे कहा - इन दोनों का कहना है कि तुम्हारे घर के धुएं से ये बीमार हो गए हैं और उनको डॉक्टर की इलाज की जरूरत है। इसलिए इन्हें डॉक्टर की फीस और दवा के खर्च के लिए हर्जाना दिलवाया जाए। थोड़ा रुक कर मुखिया ने राम और श्याम से मुखातिब होकर कहा - क्यों भाई, डॉक्टर की फीस और दवा का खर्च मिलाकर इलाज के कुल कितने रुपए लगेंगे? कुल मिलाकर यही कोई 200 प्रत्येक के इलाज पर खर्च होंगे - उन्होंने कहा। तब मुखिया ने अपना फरमान सुनाते हुए दशरथ से कहा - इन दोनों को इलाज के लिए प्रत्येक को रु.200 हर्जाना के तौर पर भुगतान करो, नहीं तो तुम्हें सजा होगी। स्थिति पूरी तरह बदल गई थी - दशरथ के सामने हर्जाना देने के अलावा और कोई चारा नहीं था। उसे मुखिया के कहे अनुसार दोनों को दो-दो सौ रुपए हर्जाने के तौर पर देने पड़े। राम और श्याम मुखिया की न्याय की प्रशंसा करते हुए अपने गांव के ओर चल पड़े।

पेड्डा ममता राव,
सामान्य सहायक

राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए भारतीय रेल में लागू प्रोत्साहन एवं पुरस्कार योजनाएं

(एक संक्षिप्त अवलोकन)

(1) हिंदी परीक्षाएं – केंद्रीय सरकार के प्रतिष्ठानों व कार्यालयों में नियोजित अहिंदीभाषी कर्मियों के लिए सेवाकालीन हिंदी प्रशिक्षण अनिवार्य होता है। हिंदी प्रशिक्षण के लिए कर्मियों की पात्रतानुसार प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ तथा पारंगत पाठ्यक्रम निर्धारित हैं। इन पाठयक्रमों की अवधि 5 महीनों की होती है और वर्ष में इसके दो सत्र होते हैं। यह प्रशिक्षण नियमित और प्राइवेट दोनों ही माध्यम में उपलब्ध हैं। पाठ्यक्रम की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिए जाते है।

क्र.सं	विवरण	प्रबोध	प्रवीण	प्राज्ञ	पारंगत
1.	70% से अधिक अंक प्राप्त करनेपर	1600/-रु	1800/-रु	2400/-रु	10000/-रु
2.	60% से 69% तक अंक प्राप्त करने पर	800/-रु	1200/-रु	1600/-रु	7000/-रु
3.	55% से 59% तक अंक प्राप्त करने पर	400/-रु	600/-रु	800/-रु	4000/-रु

निर्धारित हिंदी परीक्षाएं पास करने पर नियमानुसार एक वर्ष हेतु वैयक्तिक वेतन भी दिया जाता है।

2) निजी प्रयत्नों से हिंदी परीक्षा पास करने पर कर्मचारियों को अलग से एकमुश्त पुरस्कार राशि दिया जाता है।

प्रबोध 1600/- रुपये, प्रवीण 1500/- रुपये, प्राज्ञ 2400/- रुपये,

हिंदी टंकण परीक्षा 1600/- रुपये, हिंदी आशुलिपि 3000/- रुपये

(3) हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि परीक्षा विशेष योग्यता से पास करने पर नकद पुरस्कार – हिंदी टंकण /आशुलिपि के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य कर्मचारियों को हिंदी टंकण और हिंदी आशुलिपि में कौशल प्रदान करना है ताकि वे हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं के टंकण और आशुलिपि में दक्षता प्राप्त कर सकें। सफल प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए जाते हैं तथा विशेष योग्यता के साथ परीक्षा उत्तीर्ण करने पर निम्नलिखित राशि प्रदान की जाती है :

हिंदी टंकण	पुरस्कार राशि
97% या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	2400/-रुपये
95% से 96% तक अंक प्राप्त करने पर	1600/-रुपये
90%से 94% तक अंक प्राप्त करने पर	800/- रुपये

हिंदी आशुलिपि	पुरस्कार राशि
95% या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	2400/-रुपये
92%से 94%+चतक अंक प्राप्त करने पर	1600/-रुपये
88% से 91% तक अंक प्राप्त करने पर	800/-रुपये

4. हिंदी टाइपिंग/हिंदी आशुलिपि परीक्षा निजी तौर पर पास करने पर एकमुश्त पुरस्कार – हिंदी में सरकारी काम करने के लिए अंग्रेजी टाइपिस्टों/आशुलिपिकों को परीक्षा निजी तौर पर पास करने पर एकमुश्त पुरस्कार दिए जाने की योजना है, जो कि निम्नलिखित है :

हिंदी टाइपिंग के लिए	1600/- रुपये
हिंदी आशुलिपि के लिए	3000/- रुपये

नोट :इसके लिए टाइपिस्टों तथा हिंदी भाषा आशुलिपिकों को१२माह के लिए एक वैयक्तिक वेतनवृद्धि के बराबर की राशि का लाभ तथा हिंदीतर भाषा आशुलिपिकों को दो वेतनवृद्धि के बराबर की राशि का लाभदिया जाता है।

5. आशुलिपिकों/टाइपिस्टों को देय प्रोत्साहन भत्ता – अंग्रेजी के अतिरिक्त हिंदी टाइपिंग/हिंदी आशुलिपि का कार्य करने वाले अंग्रेजी टंकक/आशुलिपिकों को क्रमश: 160/- रुपये तथा 240/- रुपये हिंदी प्रोत्साहन भत्ता प्रतिमाह की दर से दिया जाता है।

6. **हिंदी में डिक्टेशन देने वाले अधिकारियों को देय पुरस्कार –** इस योजना के अंतर्गत हिंदी में डिक्टेशन देने वाले एक हिंदी भाषी और एक हिंदीतर भाषी रेल अधिकारी को प्रतिवर्ष निम्नानुसार नकद पुरस्कार दिए जाते हैं ।

हिंदी डिक्टेशन पुरस्कार	शब्द सीमा	राशि
क एवं ख क्षेत्र	20,000	5000/-रुपये
ग क्षेत्र	10,000	5000/-रुपये

7. रेल मंत्री हिंदी निबंध प्रतियोगिता –

इस योजना का उद्देश्य रेल कर्मचारियों को रेल संचालन और प्रबंधन संबंधी विषयों पर निबंध लेखन को प्रेरित करना है। निबंध 2500 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए। योजना के अंतर्गत राजपत्रित अधिकारियों और अराजपत्रित कर्मचारियों के लिए अलग-अलग निम्नलिखित पुरस्कार निर्धारित है :

प्रथम पुरस्कार 6000/- रुपये (राजपत्रित तथा अराजपत्रित के लिए एक-एक)

द्वितीय पुरस्कार 4000/- रुपये (राजपत्रित तथा अराजपत्रित के लिए एक-एक)

8. मूल हिंदी टिप्पण एवं प्रारुप लेखन पुरस्कार योजना–सरकारी कामकाज में वर्ष के दौरान 20 हजार या अधिक शब्द हिंदी में लिखने वाले कर्मचारी इस योजना में भाग लेने के पात्र हैं और प्रत्येक विभाग/यूनिट को दस पुरस्कार दिए जा सकते है :

प्रथम पुरस्कार (दो)	5000/- रुपये (प्रत्येक)
द्वितीय पुरस्कार(तीन)	3000/- रुपये (प्रत्येक)
तृतीय पुरस्कार(पांच)	2000/- रुपये (प्रत्येक)

9.हिंदी निबंध और वाक् प्रतियोगिताएं – रेल कार्यालयों में राजभाषा प्रयोग-प्रसार बढ़ाने के लिए अखिल भारतीय तथा क्षेत्रीय स्तर पर प्रतिवर्ष विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। इसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा प्रेरणा पुरस्कार प्राप्त करनेवाले अधिकारियों/कर्मचारियों को निम्नलिखित राशि प्रदान की जाती है :

	क्षेत्रीय स्तर पर	अखिल भारतीय स्तर पर
प्रथम पुरस्कार	2000/-रुपये	3000/-रुपये
द्वितीय पुरस्कार	1600/-रुपये	2500/-रुपये
तृतीय पुरस्कार	1200-रुपये	2000/-रुपये
प्रेरणा पुरस्कार	800/-रुपये	1500/-रुपये

10. हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता

यह प्रतियोगिता अखिल भारतीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर प्रतिवर्ष आयोजित की जाती है। इसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा प्रेरणा पुरस्कार प्राप्त करनेवाले कर्मचारियों को निम्नलिखित राशि प्रदान की जाती हैं :

	क्षेत्रीय स्तर पर	अखिल भारतीय स्तर पर
प्रथम पुरस्कार	2000/- रुपये	3000/- रुपये
द्वितीय पुरस्कार	1600/- रुपये	2500/- रुपये
तृतीय पुरस्कार	1200/- रुपये	2000/- रुपये
प्रेरणा पुरस्कार	800/- रुपये (तीन)	1500/- रुपये (पांच)

11. रेल मंत्री राजभाषा शील्ड/ट्रॉफी पुरस्कार योजना –

इस योजना के तहत रेल मंत्रालय द्वारा 'क', 'ख' तथा 'ग' क्षेत्र में स्थित प्रधान कार्यालयों /मंडलों तथा उत्पादन कारखानों को राजभाषा में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने हेतु अलग-अलग शील्ड, ट्रॉफी तथा चल वैजयंती प्रदान की जाती है। चुने गए सर्वश्रेष्ठ आदर्श स्टेशन/कारखाना को शील्ड के साथ-साथ 7000/- रुपये की नकद राशि भी प्रदान की जाती है, जिसे कर्मचारियों और अधिकारियों के बीच समान रुप से वितरित किया जाता है।

12. महाप्रबंधक राजभाषा व्यक्तिगत पुरस्कार –

इस योजना के अंतर्गत प्रतिवर्ष हिंदी में प्रशंसनीय कार्य करनेवाले रेल कर्मियों को पुरस्कृत किया जाता है और देय पुरस्कार राशि प्रदान की जाती है।

13. मंडल रेल प्रबंधक राजभाषा व्यक्तिगत पुरस्कार –इस योजना के अंतर्गत प्रतिवर्ष हिंदी में प्रशंसनीय कार्य करनेवाले रेल कर्मियों को पुरस्कृत किया जाता है और देय पुरस्कार राशि प्रदान की जाती है।

14. रेल मंत्री राजभाषा व्यक्तिगत नकद पुरस्कार –

इस योजना के अंतर्गत प्रतिवर्ष हिंदी में प्रशंसनीय कार्य करनेवाले रेल कर्मियों को पुरस्कृत किया जाता है और निम्नलिखित राशि प्रदान की जाती है:

पुरस्कार राशि 3000/- रुपये प्रत्येक

15. लाल बहादुर शास्त्री तकनीकी मौलिक पुस्तक लेखन योजना तकनीकी रेल विषयों पर हिंदी में मौलिक पुस्तकें लिखने के लिए –

रेलों से संबंधित तकनीकी विषयों पर मूल रुप से हिंदी में पुस्तकें लिखने वाले प्रतिभावान रेल कर्मियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से रेलवे बोर्ड ने यह योजना लागू की है। पुस्तक मौलिक रचना होनी चाहिए। पुस्तक का विषय रेल संचालन या रेल प्रबंध से संबंधित होना चाहिए। पुस्तक सामान्यतः 100 पृष्ठ से कम नहीं होनी चाहिए। जिन पुस्तकों को इस पुरस्कार योजना के लिए पहले प्रस्तुत किया जा चुका है, उन्हें दोबारा प्रस्तुत नहीं किया जाए। इस योजना के अंतर्गत निम्नलिखित राशि प्रदान की जाती है।

प्रथम पुरस्कार	(एक)	20,000/- रुपये
द्वितीय पुरस्कार	(एक)	10,000/- रुपये
तृतीय पुरस्कार	(एक)	7000/- रुपये

16. प्रेमचन्द पुरस्कार योजना –

रेल कर्मियों की साहित्यिक प्रतिभा और अभिरुचि को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से रेल मंत्रालय में कथा संग्रह /उपन्यास और कहानी पुस्तक लेखन पर प्रेमचन्द पुरस्कार योजना चला रखी है। पुस्तक लेखक की मौलिक कृति होनी चाहिए और पहले कहीं से पुरस्कृत न हो। किसी अन्य भाषा से ली गई अनूदित अथवा सम्पादित पुस्तकों पर विचार नहीं किया जाएगा। इस योजना के अंतर्गत एक लेखक को लगातार दो वर्ष तक पुरस्कृत नहीं किया जाएगा ।

प्रथम पुरस्कार	(एक)	20,000/- रुपये
द्वितीय पुरस्कार	(एक)	10,000/- रुपये
तृतीय पुरस्कार	(एक)	7000/- रुपये

17. मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार योजना – इस योजना के अंतर्गत सर्वश्रेष्ठ काव्य संग्रह के लिए पुरस्कार प्रदान किया जाता है। पुस्तक लेखक की मौलिक कृति होनी चाहिए और पहले कहीं से पुरस्कृत न हो। किसी अन्य भाषा से ली गई अनूदित अथवा सम्पादित पुस्तकों पर विचार नहीं किया जाएगा। इस योजना के अंतर्गत एक लेखक को लगातार दो वर्ष तक पुरस्कृत नहीं किया जाएगा।

प्रथम पुरस्कार	(एक)	20,000/- रुपये
द्वितीय पुरस्कार	(एक)	10,000/- रुपये
तृतीय पुरस्कार	(एक)	7000/- रुपये

18. रेल यात्रा वृत्तांत पुरस्कार – आम लोगों और रेल कर्मियों के रेल यात्राओं संबंधी अनुभव के आधार पर प्रत्येक कलेंडर वर्ष में पाए गए सर्वोत्तम यात्रा वृत्तांत के लिए निम्नानुसार नकद पुरस्कार प्रदान किए जाते है :

प्रथम पुरस्कार	(एक)	10 ,000/- रुपये
द्वितीय पुरस्कार	(एक)	8,000/- रुपये
तृतीय पुरस्कार	(एक)	6,000/- रुपये
प्रेरणा पुरस्कार	(पाँच)	4000/- रुपये

19. अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव –

राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग को बढ़ाने के लिए रेल मंत्रालय द्वारा प्रत्येक वर्ष अखिल रेल स्तर पर हिंदी नाट्योत्सव का आयोजन किया जाता है। इस नाट्योत्सव में भाग लेने वाले रेल कर्मियों को ट्रॉफी, स्मृति चिन्ह, प्रमाण-पत्र एवं नकद पुरस्कार राशि निम्नानुसार प्रदान कर सम्मानित किया जाता है।

नकद पुरस्कार - प्रथम - 5000/-रु

द्वितीय : 4000/-रु,

तृतीय : 3000/-रु

प्रेरणा : 2000/-रु (05 पुरस्कार)

विभिन्न विधाओं से जुड़े 15 पुरस्कार - 1000/-रु

20. राजभाषा पत्रिका में प्रकाशित लेखों आदि के लिए पुरस्कार – रेलों द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं एवं पुस्तिकाओं में प्रकाशित लेखों, निबंध, कहानी एवं रचनाओं के लिए नकद पुरस्कार राशि प्रदान करने के प्रावधान हैं ।

लेखों, निबंध, कहानी - 1000/- रु.

कविता - 400/- रु.

चित्र - 300/- रु.

21. राजभाषा पखवाड़ा/दिवस के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिता कार्यक्रमों में भाग लेनेवाले अधिकारियों/कर्मचारियों को भी प्रमाणपत्र एवं नकद पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।

हिंदी के हस्ताक्षर

नागार्जुन

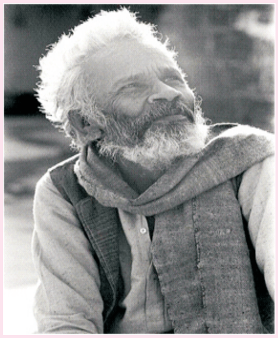

नागार्जुन- नागार्जुन ने 1945 ई. के आसपास साहित्य सेवा के क्षेत्र में कदम रखा। नागार्जुन का असली नाम 'वैद्यनाथ मिश्र' था। शून्यवाद के रूप में नागार्जुन का नाम विशेष उल्लेखनीय है। हिन्दी साहित्य में उन्होंने 'नागार्जुन' तथा मैथिली में 'यात्री' उपनाम से रचनाओं का सृजन किया। नागार्जुन उन कवियों में से हैं जिनकी कविता किसी आयतित आंदोलन की देन नहीं बल्कि प्रगतिशील मूल्यों पर विश्वास करने वाली उस सशक्त परंपरा का महत्वपूर्ण अंग हैं जिसने किसान मजदूर संघर्ष और नारी मुक्ति की कविता का केंद्रीय विमर्श बना दिया।

कबीर की पीढ़ी का यह महान कवि नागार्जुन के नाम से जाना गया। 'यात्री' आपका उपनाम था और यही आपकी प्रवृत्ति की संज्ञा भी थी। नागार्जुन ने साहित्य की सभी विधाओं में अपनी लेखन प्रतिभा का परिचय दिया। जैसे कविता, कथा साहित्य, निबंध, अनुवाद, यात्रा वृतांत, साक्षात्कार इत्यादि विधाओं में रचनात्मक लेखन किये।

नागार्जुन के काव्य में प्रगति के स्वर सर्वप्रमुख है। सही अर्थों में नागार्जुन जनता के कवि हैं। उनकी कविता में अमीर-गरीब, मालिक-मजदूर, जमींदार-कृषक, उच्चवर्ग-निम्नवर्ग के बीच द्वंद्व दिखाई देता है।

नागार्जुन वर्तमान के गर्भ से जन्म लेनेवाले भावी भारत की झांकी को देखने वाले दूरदृष्टि संपन्न साहित्यकार हैं।

नाम	नागार्जुन
जन्म	11 जून 1911, गाँव सतलखा, मधुबनी, बिहार
मृत्यु	5 नवम्बर 1998 (उम्र 87 वर्ष) ख्वाजा सराय, दरभंगा, बिहार
प्रसिद्ध कविता संग्रह	युगधारा, सतरंगे पंखों वाली, प्यासी पथराई आँखें, तालाब की मछलियाँ, तुमने कहा था, खिचड़ी विप्लव देखा हमने, हजार-हजार बाँहों वाली, पुरानी जूतियों का कोरस।
कहानी उपन्यास	रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नयी पौध, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे, दुखमोचन, कुंभीपाक, हीरक जयन्ती, उग्रतारा, जमनिया का बाबा
पुरस्कार	साहित्य अकादमी पुरस्कार-(1969), भारत भारती सम्मान(उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा), मैथिलीशरण गुप्त सम्मान(मध्य प्रदेश सरकार द्वारा), राजेन्द्र शिखर सम्मान-1994 (बिहार सरकार द्वारा), साहित्य अकादमी की सर्वोच्च फेलोशिपसे सम्मानित, राहुल सांकृत्यायन सम्मान(पश्चिम बंगाल सरकार से हिंदी अकादमी पुरस्कार

प्रतिबद्ध हूँ
संबद्ध हूँ
आबद्ध हूँ
प्रतिबद्ध हूँ, जी हाँ, प्रतिबद्ध हूँ-
बहुजन समाज की अनुपल प्रगति के निमित्त...
संकुचित 'स्व' की आपाधापी के निषेधार्थ...
अविवेकी भीड़ की 'भेड़िया-धसान' के ख़िलाफ़
अंध-बधिर 'व्यक्तियों' को सही राह बतलाने के लिए...
संबद्ध हूँ, जी हाँ, संबद्ध हूँ-
सचर-अचर सृष्टि से
शीत से, ताप से, धूप से, ओस से, हिमपात से
राग से, द्वेष से, क्रोध से, घृणा से, हर्ष से, शोक से, उमंग से, आक्रोश से...
निश्चय-अनिश्चय से, संशय-भ्रम से, क्रम से, व्यतिक्रम से
निष्ठा-अनिष्ठा से, आस्था-अनास्था से, संकल्प-विकल्प से
संबद्ध हूँ, जी हाँ, शतधा संबद्ध हूँ।
रूप-रस-गंध और स्पर्श से, शब्द से...
नाद से, ध्वनि से, स्वर से, इंगित-आकृति से...
सच से, झूठ से, दोनों की मिलावट से...
विधि से, निषेध से, पुण्य से, पाप से...
उज्वल से, मलिन से, लाभ से, हानि से...
आबद्ध हूँ, जी हाँ, शतधा आबद्ध हूँ!

नागार्जुन के काव्य का एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उनकी कविता स्थान विशेष की कविता न होकर पूरे हिंदी प्रांत की और पूरे देश की कविता है। नागार्जुन मूलतः मैथिली भाषी हैं। यात्री नाम से मैथिली में कविता भी लिखते थे। मैथिली की अपनी कविताओं पर वे साहित्य अकादमी के पुरस्कार से सम्मानित भी हुए हैं।

नन्हीं कूची

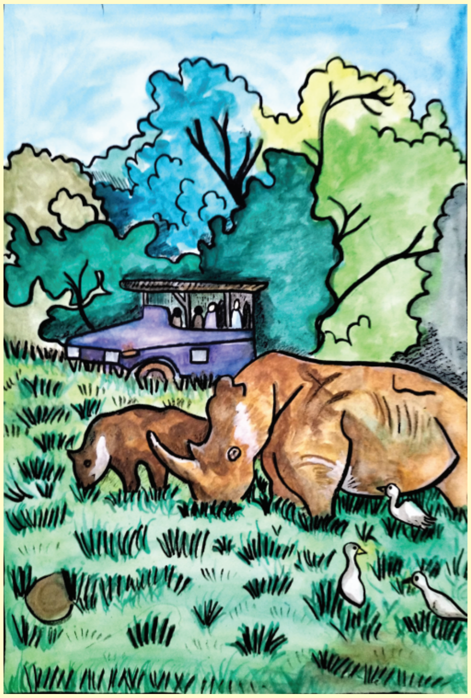

तानिशा कनोजिया
सुपुत्री-श्री शिवलाल कनोजिया, कार्यालय अधीक्षक

दिया सिंघो, सुपुत्री-श्री जीतेन सिंघो, सामान्य सहायक

दिशिका महतो,
सुपुत्री-श्री राजा राम महतो, वरिष्ठ आशुलिपिक

निशांत मेलगंडी, सुपुत्र-श्री मानसिंह मेलगंडी, निजी सहायक-II

दिनांक 14.05.2025 को उप निदेशक (राजभाषा), रेलवे वोर्ड द्वारा
मेट्रो रेलवे, कोलकाता का राजभाषा संबंधी निरीक्षण